अमृता प्रीतम चुनी हुई कविताएँ

अमृता प्रीतम

जन्म हुआ 31 अगस्त, 1919 को गुजरांवाला (पंजाब) में।
बचपन बीता लाहौर में, शिक्षा भी वहीं हुई।
लिखना शुरू किया किशोरावस्था से
जिसका क्रम बना रहा है निरंतर
कविता भी, कहानी भी, उपन्यास भी निबंध भी।
पुस्तकें 50 से भी अधिक।
महत्त्वपूर्ण रचनाएँ अनेक देशी विदेशी भाषाओं में अनूदित।
पत्रकारिता में रुचि का प्रमाण है 'नागमणि' मासिक
1966 से निरंतर छप रहा है जो निजी देख रेख में।
1957 में कविता-संग्रह 'सुनहड़े' पर अकादमी पुरस्कार से
1958 में पंजाब सरकार के भाषा विभाग द्वारा
1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट् की मानद उपाधि से
1980 में बुल्गारिया के वैप्सारोव पुरस्कार (अंतर्राष्ट्रीय) से
और अब
1982 में भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार
ज्ञानपीठ पुरस्कार (1981) से सम्मानित।

अमृता प्रीतम

चुनी हुई कविताएँ



लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक 422

अमृता प्रीतम : चुनी हुई कविताएँ
(AMRITA PRITAM : CHUNEE HUI KAVITAYEN)

प्रथम संस्करण 1982

मूल्य 35/-

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
बी/45-47 कनॉट प्लेस नयी दिल्ली 110001

मुद्रक
[illegible] दिल्ली

आवरण शिल्पी : इमरोज़

इमरोज के नाम

प्रस्तुति

'अमता प्रातम चुनी हुई कविताएँ' के प्रकाशन का सर्वोपरि स दभ है भारतीय ज्ञानपीठ का 'साहित्य पुरस्कार' जो भारतीय भाषाओ म से प्रतिवप विधिवत् चयन की गई सवश्रेष्ठ कृति के रचनाकार को एक विशेप समारोह म समर्पित होता है। श्रीमती अमता प्रीतम वप 1981 के ज्ञानपीठ पुरस्कार म सम्मानित हुई ह, जो वप क्रम मे यद्यपि सोलहवाँ है, कि तु पजाबी साहित्य को पहली बार प्राप्त हो रहा है अर्थात ज्ञानपीठ पुरस्कार का चयन करन वाली प्रवर परिपद ने भारतीय साहित्य की सविधान सम्मत प द्रह भापाओ म सन 1965 से 1974 के बीच प्रकाशित कृतिया मे से श्रीमती अमताप्रीतम की काव्य कृति को सवश्रेष्ठ निर्धारित किया है। जिस कृति का नाम इस सदभ म लिया गया है वह है 'कागज ते कैनवस' (कागज और कैनवस), कि तु सही स्थिति यह है कि इस पुरस्कार द्वारा अमृताजी के सारे साहित्यिक कृतित्व को सम्मानित किया जा रहा है। अमता प्रीतम मूल रूप से कवयित्री हैं, यद्यपि उ होने उप यास, कहानी, ललित गद्य आत्म जीवनी, डायरी, साहित्यिक मूल्याकन परक निब ध आदि विविध विधाओ मे अपने कृतित्व से सृजन के मानदण्डो की रक्षा की है, उ ह ऊँचा उठाया है।

पुरस्कारसमपण समारोह के अवसर की दष्टि से ज्ञानपीठ न अपनी परम्परा के अनुरूप श्रीमती अमृता प्रीतम से अनुरोध किया कि वह अब तक प्रकाशित अपने श्रेष्ठ कृतित्व म स श्रेष्ठतम को चुन दें ताकि उनका हि दी अनुवाद प्रकाशित किया जा सके और अ य भारतीय भापाओ को अनुवाद के लिए ऐसा सहज माध्यम प्रस्तुत किया जा सके जो आपके कृतित्व की पहचान को देश व्यापी बना सके। अनुवाद तो आखिर अनुवाद ही है मूल के निकट पहुँचन का वह प्रयत्न अवश्य है कि तु मूल की व्यजना, रसप्रवाह और प्रभाव एक अलग निराली अनुभूति है। मूल की यह सपदा अधिक से-अधिक मात्रा म पाठको तक पहुँचे इसके लिए हमने मूल कविताओ के पजाबी पाठ का देवनागरी लिप्य तरण यहाँ प्रत्येक कविता के आमने सामने द दिया है। इसका एक विशेप लाभ यह हुआ है कि मूल कविता के अथ का आत्मसात् करने पर अमृताजी की पजाबी कविता अपने आप अपना मम और रस और प्रभाव उदघाटित कर देती है। पाठक रोमाचित होता है, यह देखकर कि किस प्रकार हमारे भारतीय काव्य की मूल आत्मा इकतारे की झकृति सी समान अनुभूति देती है, और किस प्रकार युग की विकृति विसगति के चित्र हमारी देश व्यापी चेतना के उद्वेलन को प्रतिबिम्बित करते हैं।

पुरस्कार विजेताओं की मूल कविताओं को देवनागरी लिप्यन्तरण तथा हिन्दी अनुवाद के माध्यम से हिन्दी और हिन्दी इतर सहस्रों पाठकों तक सम्प्रेषित करने का यह माध्यम ज्ञानपीठ ने शकर कुरुप की 'ओटक्कुषल' (मलयालम) 'बाँसुरी', उमाशकर जोशी की निशीथ' (गुजराती), फिराक गोरखपुरी की 'बज्मे ज़िन्दगी रगे शायरी' (उर्दू), विष्णु दे की 'स्मृति सत्ता भविष्यत्' (बाग्ला), दत्तात्रय रामचन्द्र बेन्द्रे की 'नाकुतन्ति' (कन्नड़) 'चारतार', के प्रकाशन द्वारा अपनाया।

'अमृता प्रीतम चुनी हुई कविताएं' के इस सकलन की भाँति, एक अन्य सकलन समारोह के अवसर पर अग्रेजी म प्रकाशित किया गया है—'Amrita Pritam Selected Poems' जिसका अनुवाद सम्पादन श्री खुशवन्तसिंहजी ने किया है। इस सकलन के लिए भी कविताओ का चुनाव स्वय अमृता जी न किया है। पजाबी की मूल कविताएँ गुरुमुखी लिपि म दी गई हैं ताकि देश विदेश के पजाबी भाषी पाठक पाठिकाएँ अग्रेजी के माध्यम से इन कविताओ के अथ और मम का ग्रहण कर सकें—अँग्रेजी के पाठक तो अनुवाद से लाभान्वित होंगे ही।

भारतीय ज्ञानपीठ के साहित्य पुरस्कार की सम्मान राशि सन् 1965 से 1980 तक एक लाख रुपये रही। सन 1981 से इसे डेढ लाख (1,50 000/-) रु० कर दिया गया है। पुरस्कार का मूल्य राशि की दृष्टि से जितना भी महत्व पूर्ण रहा हो, या हो, इसका स्थायी मूल्य इस तथ्य म है कि पुरस्कार विजेता अपनी भाषा और क्षेत्र की सीमाओ को लाँघकर अखिल भारतीय स्तर पर 'भारतीय साहित्यकार के रूप म प्रतिष्ठित होता है। पुरस्कृत कृतिकार और उसके कृतित्व के साथ सारे देश का भावनात्मक तादात्म्य स्थापित हो जाता है। इस तादात्म्य और गौरव भावना के मूल मे यह तथ्य भी विशेष रूप से क्रियाशील होता है कि ज्ञानपीठ पुरस्कारो का निणय निष्पक्ष और साहित्यिक मूल्यो के आधार पर होता है। पुरस्कार निणय की इस प्रक्रिया म प्रवर परिषद् की सहायता सैकडा साहित्य समीक्षक भाषा-परामश समितियो के माध्यम से और पाठक पाठिकाएँ प्रस्ताव-पत्रो के माध्यम से करते हैं।

अमृता प्रीतम पजाबी की पहली साहित्यकार हैं, और महिला-विजेताओ म दूसरी। पहली महिला जिन्हे 1976 के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है श्रीमती आशापूर्णा देवी हैं जिनके बाग्ला उपन्यास 'प्रथम प्रतिश्रुति' का चुनाव उस वष श्रेष्ठ कृति के रूप मे हुआ था। इन दोनो से पहले जिस यशस्वी और तपस्विनी साहित्य साधिका का नाम ज्ञानपीठ गौरव से लेती है, वह हैं श्रीमती महादेवी वमा जिन्होने सन 1974 का पुरस्कार मराठी लेखक विष्णुसखाराम खाडेकर को अपने हाथो समर्पित करके पुरस्कार की प्रतिष्ठा मे योगदान दिया है।

भारतीय साहित्य जगत म अमृता प्रीतम की छवि एक ऐसी कवयित्री की है जिसने जीवन जीने मे और कविता रचने मे किसी विभाजक सीमा रेखा को बीच

मे नही आने दिया है। वह इतनी पारदर्शी हैं कि उनसे साक्षात्कार करना स्वय अपने को नये सिर से पहचानना है, और जीवन तथा जगत् के प्राण स्पन्दन से, मानव हृदय की धड़कन से साक्षात्कार करना है। क्या कारण है कि अमृता प्रीतम का जन्म गुजरांवाला (पजाब) की जिस धरती पर 31 अगस्त 1919 को हुआ, वहा का एक अपरिचित व्यक्ति ज्ञानपीठ पुरस्कार का समाचार पढकर दिल्ली आता है और एक दुपट्टे के छोर में बँधी सौगात अमृताजी के हाथ मे थमाता हुआ रोमाचित होकर कहता है अमृताजी यह उस जमीन की मिट्टी लाया हू जहाँ आप पैदा हुईं आगे वह बोल ही नहीं सका

"और, मेरे वजूद को एक बार छुआ
धीरे से—
ऐसे, जैसे कोई वतन की मिट्टी को छूता है".

नारी की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सरचना के प्रत्यक्ष ज्ञान और अनुभव की असाधारण परिस्थिति मे तनावो, सघर्षों तथा उद्दाम प्रेम के सहज आवेगों की आँच को जिसने भोगा है और अभिव्यक्ति का कुन्दन बनाया है, उसके कृतित्व का मूल्याकन धमनियो के रक्त और हृदय के स्पन्दन से ही हो सकता है।

अमृता प्रीतम का कृतित्व इस बात का प्रमाण है कि पजाबी कविता की अपनी एक अलग पहचान है, उसकी अपनी शक्ति है, अपना सौन्दय है, अपना तेवर है। अमृता प्रीतम उसका श्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करती हैं—और यह सकलन अमृता जी की श्रेष्ठतम कविताओं का प्रतिनिधित्व करता है। युग का स्पन्दन, मानव नियति के अर्थ की खोज, वतमान के प्रकाश के झरोखे और अधकार की अतल खाई, नारी की अतरग अनुभूतियो के अछूते प्रतिबिम्ब, दद के पवत मे दरारें बनाता करुणा का निझर, अस्तित्व के खण्डहरो मे सर्वहारा नागी की पुकार की गूज—वारिसशाह के लिए, माता तृप्ता के सपनों मे प्रकृति सुन्दरी की पायल की झकार पर अवतरित महाप्रभु के सासो के शान्त स्वर, सब कुछ अद्भुत और मोहक। और, बहुत कुछ ऐसा भी जो बेचैन करता है, उद्वेलक है।

श्रीमती अमृता प्रीतम की कविताओ का यह सग्रह पाठकों का निश्चित ही अभिभूत करेगा। जिन्होंने अमृता को पढा है सुना है और जो मानते हैं कि उनका काव्य जगत् से घनिष्ठ परिचय है, वे भी स्वीकारेंगे कि जिस स्तर की जा सामग्री 'अमृता प्रीतम चुनी हुई कविताएँ' म सकलित है, और अनुवाद को जिस सुघराई एव प्रामाणिकता से साधा गया है, वह अत्यन्त दुलभ है।

11 दिसम्बर, 1982

—लक्ष्मीचन्द्र जन
निदशक भारतीय ज्ञानपीठ

अनुक्रम

अमृता प्रीतम :

चुनी हुई कविताएँ

धुप्प दा टोटा

मैंनू उह वेला याद ए—
जद इक टोटा धुप्प दा सूरज दी उगल फड के
न्हेरे दा मेला वेखदा भीडा दे विच्च गुआचिआ

सोचदी हा—सहिम दा ते सुज दा वी साक हुदा ए
मैं जु इस दी कुछ नही लगदी
पर इस गुआचे वाल ने इक हत्थ मेरा फड लिआ

तू निते लभदा नही—
हत्थ न छोहदा पिआ निक्का ते तत्ता इक साह
ना हत्थ दे नाल परचदा ना हत्थ दा खादा वसाह

न्हेरा किते मुकदा नही
मेले दे रौले विच्च वी है इक आलम चुप्प दा
ते याद तेरी इस तरहा जिओ इक टोटा धुप्प दा

धूप का टुकडा

मुझे वह समय याद है—
जब धूप का एक टुकडा सूरज की उगली थाम कर
अँधेरे का मेला देखता उस भीड मे खो गया

सोचती हूँ सहम का और सूनेपन का एक नाता है
मैं इस की कुछ नही लगती
पर इस खोये बच्चे ने मेरा हाथ थाम लिया

तुम कही नही मिलते
हाथ को छू रहा है एक नन्हा-सा गर्म श्वास
न हाथ से बहलता है, न हाथ को छोडता है

अँधेरे का कोई पार नही
मेले के शोर मे भी एक खामोशी का आलम है
और तुम्हारी याद इस तरह जैसे धूप का एक टुकडा

याद

सूरज ने कुझ घावर के अज चानण दी इक बारी खोहली
बद्दल दी इक बारी भीडी, उतर गिआ न्हेरे दी पौडी

अम्बर दे भरवट्टिआ उत्ते पता नही क्यो मुढका आइआ
तारे, सारे बीडे खोहले गलो चन्न दा घुडता लाहिआ

बैठी हा मैं दिल दी गुट्ठे, याद तेरी अज ईकण आई—
जीकण गिल्ली लक्कड विच्चो, गाढा कौडा धूआ उट्ठे

नाल संकडे सोचा आईआ, जीकण सुक्की लक्कड भरदी—
लाल किरमची अग्ग दे हउके, दोवें लक्कडा हुणे बुझाईआ

वरहे जिस तरा कोले खिन्डे कुझ बुज्झे, कुझ बुज्झणो रह गए
हत्थ समे दा साभण लग्गा पोट्या उत्ते छाले पै गए

इश्क तेरे दे हत्थो छुट्टी जिंद काहडनी टुट्ट गई है
तवारीख अज चौके विच्चो भुक्खी भाणी उट्ठ गई है

याद

आज सूरज ने कुछ घबरा कर रोशनी की एक खिडकी खोली
बादल की एक खिडकी बन्द की और अँधेरे की सीढ़ियाँ उतर गया

आसमान की भवो पर जाने क्यो पसीना आ गया
सितारो के बटन खोल कर उस ने चाँद का कुर्ता उतार दिया

मैं दिल के एक कोने मे बैठी हूँ, तुम्हारी याद इस तरह आई—
जैसे गीली लकडी मे से गाढा कड़ुवा धुआँ उठे

साथ हजारो खयाल आये जैसे सूखी लकडी
सुर्ख आग की आहे भरे, दोनो लकडियाँ अभी बुझाई हैं

वर्ष कोयलो की तरह बिखरे हुए कुछ बुझ गये, कुछ बुझने से रह गये
वक्त का हाथ जब समेटने लगा पोरो पर छाले पड गए

तेरे इश्क के हाथ से छूट गई और ज़िदगी की हँडिया टूट गई
इतिहास का मेहमान चौके से भूखा उठ गया

रोज़ी

नीले अंबर दी इक गुट्ठे रात-मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विच्चो चिट्टा गाडा धूआ उट्ठे

सुपने जीकण कई भट्ठीआ
हर इक भट्ठी अग्ग झोकदा मेरा इश्क मजूरी करदा

मेल तेरा कुझ ईकण मिलदा
जीकण कोई तलीआ उत्ते इक डग दी रोजो धरदा

जिहडी सक्खणी हाडी भरदा
रिन्ह पका के अन्न परस के उहीओ हाडो मूधी धरदा

रहिंदी अग्ग 'ते हत्थ सेकदा
घडीए मासे निस्सल हुदा शुकर शुकर अल्ला दा करदा

रात-मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विच्ची धूआ निकले इसे आस ते

जोई कमाणा सोई खाणा
ना कोई किणका कल दा वचिआ ना कोई भोरा भलक वास्ते

रोजी

नीले आसमान के कोने मे रात-मिल का साइरन बोलता है
चांद की चिमनी मे से सफेद गाढा धुआं उठता है

सपने—जैसे कई भट्ठियां हैं
हर भट्ठी मे आग झोकता हुआ मेरा इश्क मजदूरी करता है

तेरा मिलना ऐसे होता है
जैसे कोई हथेली पर एक वक्त की रोज़ी रख दे।

जो खाली हँडिया भरती है
राध-पका कर अन्न परस कर वही हांडी उलटा रखता है

बची आंच पर हाथ सेकता है
घडी पहर को सुस्ता लेता है और खुदा का शुक्र मनाता है।

रात-मिल का साइरन बोलता है
चांद की चिमनी मे से धुआं इस उम्मीद पर निकलता है

जो कमाना है वही खाना है
न कोई टुकडा कल का बचा है न कोई टुकडा कल के लिए है

मैं

अवर जदो वी रात दा ते चानण दा रिशता गंढदे
तारे वधाईआ वडदे
क्यो मोचदी हा मैं जे कदी मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

जिस रात दे होठा ने कदे सुपने दा मत्था चुम्मिआ
सोचा दे पैरी छणकदी इक झाजर जही उस रात दी

इक विजली जदो असमान ते बद्दला दे वरके फोलदी
मेरी कहाणी भटकदी आद ढूडदी, अन्त ढूडदी

है खडक पैदी कोई तेरे दिल दी इक बारी जदो
मैं सोचदी हा केहा जही जुरअत है मेरे सवाल दी!

सलोआ दे उत्ते इश्क दी मेहदी दा कुझ दावा नही
हिजर दा इक रग है ते इक खुशबू है तेरे जिकर दी

मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

मैं

आसमान जब भी रात का और रोशनी का रिश्ता जोडते हैं
सितारे मुबारकबाद देते हैं
क्यो सोचती हूँ मैं अगर कही मैं, जो तेरी कुछ नही लगती

जिस रात के होठो ने कभी सपने का माथा चूमा था
सोच के पैरो मे उस रात से इक पायल-सी बज रही है

इक बिजली जब आसमान मे बादलो के वर्क उलटती है
मेरी कहानी भटकती है—आदि ढूढती है, अन्त ढूंढती है

तेरे दिल की एक खिडकी जब कही बज उठती है
सोचती हूँ, मेरे सवाल की यह कैसी जुरत है ।

हथेलियो पर इश्क की मेहदी का कोई दावा नही
हिज्र का एक रग है और तेरे जिक्र की एक खुशबू

मैं, जो तेरी कुछ नही लगती

दावत

रात-कुडी ने दावत दित्ती,
तारे जीकण चौल छडीदे किसने देगा चाढीआ

किसने आदी चन्न सुराही
चानण घुट्ट शराब दा ते अवर अक्खा गाढीआ

धरती दा अज दिल पिआ धडके
मैं सुणिआ अज टाहृणा दे घर फुल्ल प्राहुणे आए वे

इस दे अग्गो की युझ लिखिआ
हुण एन्हा तक्दीरा कोलो केहडा पुच्छण जाए वे

उमरा दे इस कागज ऊत्ते—
इश्क तेरे अगूठा लाइआ कौण हिसाब चुकाएगा

किसमत ने इक नगमा लिखिआ
कहिंदे ने कोई अज रात नू ओहिओ नगमा गाएगा

कलप-वृछ दी छावे वहि के
कामधेन दा दुध पसमिआ किसने भरीआ दोहणीआ

किहडा सुणे हवा दे हउके
चल नी जिन्दे चलीए—सानू सद्दण आईआ होणीआ

दावत

रात-कुडी ने दावत दी
सितारो के चावल फटक कर यह देग किस ने चढा दो

चाँद की सुराही कौन लाया
चाँदनी की शराव पी कर आकाश की आँखे गहरा गई

धरती का दिल धडक रहा है
सुना है आज टहनियो के घर फूल मेहमान हुए है

आगे क्या लिखा है
अब इन तकदीरो से कौन पूछने जाए

उम्र के कागज पर—
तेरे इश्क ने अँगूठा लगाया, हिसाब कौन चुकाएगा !

किस्मत ने इक नगमा लिखा है
कहते हैं कोई आज रात वही नगमा गाएगा

कल्प वृक्ष की छाँव मे बैठ कर
कामधेनु के छलके दूध से किस ने आज तक दोहनी भरी !

हवा की आहे कौन सुने,
चलूँ, आज मुझे तकदीर बुलाने आई है

आवाज

वग्हिा दे पैंडे चीर के तेरी आवाज आई है
सस्सी दे पैरा नू जिवें किसे ने मरहम लाई है

अज किसे दे मोढिआ तो इक हुमा लघिआ जिवें
चन्न ने अज रात दे जाला च फुल्ल टुगिआ जिवें

नीदर दे होठा चो जिवें सुपने दी महिक आउदी है
पहिली किरन जिओ रात दे मत्थे नू सगण लाउदी है

हर इक हरफ दे वदन 'चो तेरी महिक अउदी रही
मुहब्वत दे पहिले गीत दी पहिली सतर गउदी रही

हसरत दे धागे जोड के सालू असी उणदे रहे
विरहा दी हिचकी विच्च वी शहनाई नू सुणदे रहे

आवाज

वरसो की राहे चीर कर तेरा स्वर आया है
सस्सी के पैरो को जैसे किसी ने मरहम लगाया है

आज किसी के सर से जैसे हुमा गुजर गया
चाँद ने रात के वालो मे जसे फूल टाँक दिया

नीद के होठो से जैसे सपने की महक आती है
पहली किरण जैसे रात की माग मे सिंदूर भरती है

हर एक हर्फ के वदन से तेरी महक आती रही
मुहब्बत के पहले गीत की पहली सतर गाती रही

हसरत के धागे जोड कर हम ओढनी वुनते रहे
बिरहा की हिचकी मे भी हम शहनाई को सुनते रहे

तू नही आया

चेतर ने पासा मोडिया, रगा दे मेले वास्ते
फुल्ला ने रेशम जोडिया—तू नही आया

होईआ दुपहिरा लम्बीआ, दाखा नू लाली छोह गई
दाती ने कणका चुम्मीआ—तू नही आया

बद्दला दी दुनीआ छा गई, धरती ने बुक्का जोड के
अवर दी रहिमत पी लई—तू नही आया

रुक्खा ने जादू कर लिआ, जगल नू छोहदी पौण दे
होठा च शहद भर गिआ—तू नही आया

रुत्ता ने जादू छोहणीआ, चना ने पाईआ आण के
राता दे मत्थे दौणीआ—तू नही आया

अज फेर तारे कह गए, उमरा दे महिली अजे वी
हुसना दे दीवे बल रहे—तू नही आया

किरणा दा झुरमट आखदा, राता दी गूढी नीद चो
हाले वी चानण जागदा—तू नही आया

तू नही आया

चैत ने करवट ली, रगो के मेले के लिए
फूलो ने रेशम बटोरा—तू नही आया

दोपहरें लम्बी हो गईं, दाखों को लाली छू गई
दराती ने गेहू की वालियाँ चूम ली—तू नही आया

वादलो की दुनिया छा गई, धरती ने दोनो हाथ वढा कर
आसमान की रहमत पी ली—तू नही आया

पेडो ने जादू कर दिया, जगल से आई हवा के
होठो मे शहद भर गया—तू नही आया

ऋतु ने एक टोना कर दिया, चाद ने आकर
रात के माथे झूमर लटका दिया—तू नही आया

आज तारो ने फिर कहा, उम्र के महल मे अब भी
हुस्न के दिये जल रहे हैं—तू नही आया

किरणो का झुरमुट कहता है, रातो की गहरी नीद से
रोशनी अब भी जागती है—तू नही आया

गल्लां

आ सज्जण अज गल्ला करीए

तेरे दिल दे बागा अदर हरी चाह दी पत्ती वागू
जिहडी गल्ल जदो की उग्गो उसे गल्ल नू तोड लिआं तू

हर इक कूली गल्ल छुगाई, हर इक पत्ती सुक्कणे पाई

मिट्टी दे इस चुल्हे अदर किसे अग्ग नू फोल लवागे
इक-दो फूका मार लवागे बुझ्झी लम्फड बाल लवागे

मिट्टी दे इस चुल्हे अदर सेक इश्क दा वाग पवेगा
मेरे जिसम तावीए अदर दिल दा पाणी खोल पवेगा

आ सज्जण अज खोलहू पोटली

हरी चाह दी पत्ती वागू
उहीओ तोड गवाईआ गल्ला उहीओ साभ सुकाईआ गल्ला

इस पाणी विच पा के वेखी इस दा रग वटा के वेखी

तत्ता घुट्ट इक तू वी पीवीं । तत्ता घुट्ट इक मैं वी पीवा
उमर-हुनाला असा लघाइआ, उमर-सिआला लघदा नहीऊ

आ सज्जण अज गल्ला करीए

वातें

आ साजन, आज वातें कर लें

तेरे दिल के वागो मे हरी चाह की पत्ती-जैसी
जो वात जव भी उगी, तूने वही वात तोड ली

हर इक नाजुक वात छुपा ली, हर इक पत्ती सूखने डाल दी

मिट्टी के इस चूल्हे मे से हम कोई चिनगारी ढूढ लेगे
एक-दो फूकें मार लेंगे वुझती लकडी फिर से वाल लेंगे

मिट्टी के इस चूल्हे मे इश्क की आँच वोल उठेगी
मेरे जिस्म की हँडिया मे दिल का पानी खौल उठेगा

आ साजन, आज खोल पोटली

हरी चाय की पत्ती की तरह
वही तोड-गँवाई वातें वही सम्भाल सुखाई वातें
इस पानी मे डाल कर देख, इसका रग वदल कर देख

गर्म घूँट इक तुम भी पीना, गर्म घूट इक मैं भी पी लूँ
उम्र का ग्रीष्म हमने विता दिया, उम्र का शिशिर नही वीतता

आ साजन, आज वातें कर लें. .

सिआल

जिन्द मेरी ठुरकदी, होठ नीलें पै गए
ते आत्मा दे पैर वल्ला कम्जणी चढ़दी पई

वरिहा दे वद्दल गरजदे इस उमर दे असमान ते
वेहड़े दे विच्च पदे पए कानन गोहड़े बरफ दे

गलीआ दे चिक्कड लग्घ के—
जे अज तू आवें किते मैं पैर तेरे धो दिआ

वुत्त तेरा सूरजी—
कम्वल दी कन्नी चुक्क के मैं हड्डा दा ठार भन्न ला

इक कौली धुप्प दी मैं डीक लाके पी लवा
तें इक टोटा धुप्प दा मैं कुक्ख दे विच पा लवा

ते फेर खौरे उमर दा इह सिआल गुजर जाएगा

जाडा

मेरी जान ठिठुर रही है, होंठ नीले पड गए हैं
आत्मा के पैर की तरफ से कँपकँपी छट रही है

इस उम्र के आसमान पर, बरसों के बादल गरज रहे हैं
कानून-जैसे बर्फ के गोले, मेरे आंगन मे गिर रहे है

कीचड भरी गलिया पार करके—
जो तुम कही आ जाओ, मैं तुम्हारे पैर धो दूं

तुम्हारा सूरज का-सा बुत—
कम्बल का किनारा उठा कर मैं हाथ-पाव सेक लू

एक कटोरा धूप का मैं एक सास मे पी लूं
और एक टुकडा धूप का मैं अपनी कोख मे रख लू

और इस तरह शायद जन्म-जन्म का जाडा बीत जाये

सवेर

डाढी उच्ची कन्ध वक्त दी
वडी उचावी भीडी सौडी रात जिवें लक्कड दी पौडी

लिफदे जादे गोल तिलकवें हादसिआ दे सैआ डण्डे
जिस डण्डे ते पैर टिकादी उस तो अगला घट्ट के फडदी
जिन्द-सवेर उताह् नू चढदी

अवर-आशक ऊधी पाई बैठा धु द दा हुक्का पीवे
सूरज दा इक कोला लैके लीवा पावे फेर बुझावे

फिर पूरब दी मन्जी झाडे, बद्दल वट्ट कउढ के सारे
नीली चादर करे सवाहरी गिणे गीटीआ वारा वारी

कदो किसे दा हत्थ छुटकिआ कदो किसे दा पैर थिडकिआ
गल्ल, जिस तरा मूहो गुगी, गल्ल जिस तरा कनो वोली

पूरब दी अज मन्जी खाली काई सवेर वहिण ना आई
अवर बौरा ढूड रिहा है धरती दी हर खुन्दर खाई

सवेरा

समय की दीवार बहुत ऊँची
लम्बी तग और अँधियारी रात जैसे काठ की सीढी

लचकनी गोल फिसलनी हादसो की कई सीढियाँ
जिस सीढी पर पाँव टिकाती उस से अगली सीढी थामती
एक सुबह ऊपर को चढती

अम्बर-आशिक औंधा बैठा आज धुध का हुक्का पीए
सूरज का एक कोयला ले कर लोके खीचे और बुझाए

फिर पूरब की खाट झाडता बादल जैसे कई सिलवटे
नीली चादर झाड बिछाता और सुबह की राह देखता

हाथ किसी का कब छूटा, पाँव किसी का कब फिसला
बात जिस तरह बिल्कुल गूगी, बात जिस तरह बिल्कुल बहरी

पूरब की खटिया खाली है, कोई सुबह आज नही आई
अम्बर बौरा ढूढ रहा है धरती की हर खदक-खाई

अग्ग दी वात

अग्ग दी इह वात है तूहे इह वात पाई सी
ओही सिगरट जिन्द दी जो तू कदे सुलगाई सी

चिणग तेरी देण सी इह दिल सदा धुखदा रिहा
वक्त कानी पकड के लेखा कोई लिखदा रिहा

चौदा कु मिन्ट छाए ने आ वेख वहीआ इहदीआ
चौदा कु साल होय ने आ वेख कलमा कहिंदीआ

एम मेरे जिसम अन्दर साह तेग चलदा रिहा
धरती गवाही दएगी धआ निकलदा रिहा

जिन्द सिगरट बल गई, महिक मेरे इश्क दी—
कुझ तेरे साहा दे विच कुझ पौण दे विच रल गई

वेख टोटा आखरी उगर ा दे विच्चो छड्ड दे
सेक मेरे इश्क दा पोटा ना तेरा छोह लवे

जिन्द दा हुण गम नही इस अग्ग नू सम्भाल लै
खैर मगा हत्थ दी, हुण होर सिगरट बाल लै

आग की बात

यह आग की बात है, तूने यह बात सुनाई थी
यह जिन्दगी की वही सिगरेट है जो तूने कभी सुलगाई थी

चिनगारी तूने दी थी, यह दिल सदा जलता रहा
वक्त कलम पकड़ कर कोई हिसाब लिखता रहा

चौदह मिनट हुए हैं इस का खाता देखो
चौदह साल हुए हैं इस कलम से पूछो

मेरे इस जिस्म में तेरा श्वास चलता रहा
धरती गवाही देगी धुआं निकलता रहा

उम्र की सिगरेट जल गई, मेरे इश्क की महक—
कुछ तेरी सांसों में कुछ हवा में मिल गई

देखो यह आखिरी टुकड़ा है उँगलियों में से छोड़ दो
कहीं मेरे इश्क की आँच तुम्हारी उँगली को न छू ले

जिन्दगी का अब गम नहीं, इस आग को संभाल ले
तेरे हाथ की खैर मांगती हूँ, अब और सिगरेट जला ले

बुरकी

जिन्द-कुडी ने कल्ह रात नू सुपने दी इक बुरकी भन्नी
पता नहीं इह खबर किस तरा पहुँच गई अंबर दे कन्नी

वड्डिआ खम्भा खबर सुणी ते लम्बीआ चुज्झा खबर सुणी
ते खुढिआ मूहा खबर सुणी ते तिखिआ नहुआ खबर सुणी

इस बुरकी दा नगा पिण्डा, इस खुशबू दा कज्जण पाटा
ना कोई मिलिआ मन दा ओहला, ना कोई तन दा झुगलमाटा

इक झपट्टे बुरकी खुस्सी दोवें हत्थ वलूधर घत्ते,
इक झपट्टे गल्ह झरीटी नहूदर वज्जी मूह दे उत्ते

मूह दे विच बुरकी दी थावें रहि गईआ बुरकी दीआ गल्ला
अंबर दे विच उड्डण पईआ राता जिवें कालीआ इल्ला

निवाला

जीवन-बाला ने कल रात सपने का इक निवाला तोडा
जाने यह खबर किस तरह आसमान के कानो तक जा पहुँची

बडे पखो ने यह खबर सुनी, लम्बी चोंचो ने यह खबर सुनी
तेज जबानो ने यह खबर सुनी, तीखे नाखूनो ने यह खबर सुनी

इस निवाले का बदन नगा, खुशबू की ओढनी फटी हुई
मन की ओट नही मिली, तन की ओट नही मिली

एक झपट्टे मे निवाला छिन गया, दोनो हाथ जख्मी हो गये
गालो पर खराशें आई, होठो पर नाखूनो के निशान

मुँह मे निवाले की जगह निवाले की बातें रह गई
और आसमान मे रातें काली चीलो की तरह उडने लगी

नागमणी

डाढा घणा अकल दा जगल
इलम जिवें इक रूख चन्नण दा
मन दा सप्प कौडीआ वाला
मत्थे दे विच्च मणी चमकदी
पौणा दे विच्च फण फैलाया

पोले पैर सपाधा आया
होठा उत्ते वीन इश्क दी
हत्थ आस दी अन्ही पच्छी
कच्चा दुध मुहब्बत वाला
मन दा सप्प पटारी पाया

बैठ सपैना इक चुराहे
वीन वजावे सप्प खिडावे
कदे सप्प न् गल विच पावे
हस्से राग अते विख रोवे
सारा लोक तमाशे आया

नागमणि

गहरा घना अक्ल का जंगल
ज्ञान वृक्ष चन्दन का जैसे
मन का सांप कौडियों वाला
माथे मे एक मणि चमकती
और हवा मे फण फैलाया

धीमे पांव सपेरा आया
होठो पर एक बीन इश्क की
हाथ आस की बन्द पिटारी
कच्चा दूध मुहब्बत वाला
मन का सांप पिटारी पाया

बैठ सपेरा एक चौराहे
बीन बजाए साप खिलाए
कभी सांप को गले लगाए
हँसे राग और विष रोए
सारा लोक तमाशे आया

कम्बणी

धरती ने अज वरत खोल्हणा
दिल दी थाली कौण परोसे
गीता वाले चौल छडदिआ
कम्बण लग्गी उक्खली

होणी ने अज रू पिंजाइआ
जिओ जिओ चरखा बूकर देवे
कम्बी जावे जिंद जुलाही
कम्बी जावे तक्कली

अंबर दी अज पौडी कम्बे
तारे उतरण वाहो दाही
विहडे मन दे महला अन्दर
पई अचानक भज्जली

किस पापी ने तीर चलाया
इश्क दा जंगल सहम गिआ है
डरदी कम्बदी भज्ज गई है
यादा दी मिरगावली

कम्पन

आज धरित्री व्रत खोलेगी
दिल की थाली कैसे परसूं
गीतो का यह धान कूटते
काँप रही है ओखली

किस्मत ने है रुई पिंजाई
ज्यो-ज्यो चर्खा गूज सुनाएँ
काँप रही है साँस-जुलाहिन
काँप रही है तकली

आज गगन की सीढी कापे
तारे उतरें एक-एक कर
मन के किन महलो मे सहसा
मची हुई है खलबली

किस पापी ने तीर चलाया
इश्क का जगल सहम गया है
डरते-डरते भाग गई है
यादो की मिरगावली



दावत

अकल इलम ने मिट्टी गोई
कलम मेरी घुमियारी होई
गीत जिस तरा सागर कजे
हुणे-हुणे इन चाक तो लाहे

दिल दी भट्टी बालण पाया
दोही हत्थी उमर खरच के
कड्ढी असा शराब इश्क दी
महफल दे विच्च ले के आए

सदीआ ने अज हुक्का भरिआ
किहा सराप दित्तोई मानू
जिद-कुडी अज विट्टर बैठी
किसे घुट्ट नू मूह ना लाए

इस दावत नू की बुझ कहीए
इश्क-शराब इस तरां जापे
हर इक जाम दीआ अक्खा विच्च
जीकण गट-गट अथरू आए

दावत

अक्ल इल्म की माटी भीगी
कलम मेरी कुम्हारिन हुई
गीत जिस तरह जाम, चाक से—
अभी-अभी हो गए उतारे

दिल की भट्ठी आग जलाई
दोनो हाथो उमर खर्च कर
एक शराब हजार-आतशा
महफिल मे हम ले कर आए

सदियो ने नि श्वास लिया इक
कैसा शाप दिया है हम को
जीवन-प्याला रूठ गई है
एक घूट न होठ छुआए

इस दावत को क्या सज्ञा दें
इश्क-शराव इस तरह लगती
हर इक जाम की आँखो मे हो
जैसे कुछ आँसू भर आये

कुफर

अज असा इक दुनीआ वेची
ते इक दीन विहाज लिआए
गल्ल कुफर दी कीती

सुपने दा इक थान उणाया
गज कु कपडा पाड लिआ, ते
उमर दी चोली सीती

अज असा अवर दे घडिओ
वद्दल दी इक चय्यणी लाही
घुट्ट चानणी पीती

गीता नाल चुका जावागे
इह ज असा मौत दे कोलो
घडी हुधारी लीती

कुफ़

आज हमने एक दुनिया वेची
और एक दीन खरीद लिया
हमने कुफ़ की बात की

सपनों का एक थान बुना था
एक गज कपड़ा फाड़ लिया
और उम्र की चोली सी ली

आज हमने आसमान के घड़े से
बादल का ढकना उतारा
और एक घूट चाँदनी पी ली

यह जो एक घड़ी हमने
मौत से उधार ली है
गीतों से इस का दाम चुका देंगे

इक मुकाम

कलम ने अज तोडिआ गीता दा काफीआ
इश्क मेरा पहुँचिआ इह केहडे मुकाम ते ।

वेख नजरा वालिआ कि वहनी आ साहमणे
तली विचो हिजर दी छिलतर नू कड्ढ दे ।

जिस हनेरे तो सिवाए होर कुझ ना कत्तिआ
उह मुहब्बत दे गई किरणा अटेर के

उट्ठ आपणे घडे 'चो पाणी दा कौल देह
धो लवागी बैठ के राहवा दे हादसे

एक मुकाम

कलम ने आज गीतो का काफिया तोड दिया
मेरा इश्क यह किस मुकाम पर आ गया है

देख नजर वाले, तेरे सामने बैठी हूँ
मेरे हाथ से हिज्र का काटा निकाल दे

जिस ने अँधेरे के अलावा कभी कुछ नही बुना
वह मुहब्बत आज किरणे बुन कर दे गई

उठो, अपने घडे से पानी का एक कटोरा दो
राह के हादसे मैं इस पानी से धो लूगी

रोशनी

हिजर दी इस रात विच्च कुझ रोशनी आदी पई
फेर वत्ती याद दी कुझ होर उच्ची हो गई ।

इक हादसा, इक जखम ते इक चीस दिल दे कोल सी
रात नू इह तारिआ दी रकम जरवा दे गई

नजर दे असमान तो है टुर गया सूरज किते
चन्न विच पर ओस दी खुशबू अजे आदी पई

रल गई सी एस विच इक बून्द तेरे इश्क दी
इस लई मैं उमर दी सारी कुडित्तण पी लई

रोशनी

हिज्र की इस रात मे कुछ रोशनी-सी आ रही है
शायद याद की वत्ती कुछ और ऊँची हो गई है

एक हादसा, एक जख्म और एक टीस दिल के पास थी
रात को सितारो की रकम इन्हे जरव दे गई

नजर के आसमान से सूरज कही दूर चला गया
पर अब भी चाँद मे उस की खुशबू आ रही है

तेरे इश्क की एक बूंद इस मे मिल गई थी
इसलिए मैं ने उम्र की सारी कडवाहट पी ली

इक गल्ल

सुच्चा दुद्ध मुहब्बत मेरी
चिट्टे चावल वरिहा वाले
माजी धोती दिल दी हाडी
दुनीआ जीकण गिल्ली लक्कड
सारी वस्त ध्वाघ गई है

रात जिवे पित्तल दी कौली
चिटटे चन्न दी क्ली लहि गई
अज कलपना कसर गई है
सुपना जीकण कसर जाए
नीदर जिवें कुडाहद गई है

जिंद-कुडी दे अग मोकले
यादा जिवे सौडीआ छापा
उगला दे विच चीघा पईआ
समिआ दे सुनियारे कोलो
रेती जिवे खडाच गई है

ठरदा जाए इस्क दा पिंडा
गीत दा झग्गा कीकण सीवा
उधड गया खिआल तरोपा
क्लम-सूई दा नक्का टुट्टा
सारी गल्न गुआच गई है

एक बात

सुच्चे दूध जैसी मेरी मुहब्बत
चिट्टे चावल बरसो के
माजी-धुली दिल की हांडी
दुनिया जैसे गीली लकडी
सारी वस्तु धुआँख गई है

रात जैसे पीतल की कटोरी है
चाँद की सफेद क्लई उतर गई
कल्पना पितला गई है
सपना कसला गया है
और सारी नीद कडवा गई है

जिन्दगी के हाथ मे
यादे जैसे सँकरी अँगूठी
उँगली मे क्सक पड गई
समय के सुनार से
रेती जैसे खो गई है

इश्क का वदन ठिठुर रहा है
गीत का कुर्ता कैसे सीऊँ
खयालो का धागा उलझ गया है
कलम की सुई टूट गई है
और सारी वात खो गई है

खुशी

दूगे किधरो वाज सुणीवी वाज तिस तरा तेरी होवे
कन्ना ने इक हऊका भरिआ कम्वण लग्गी जिन्द सिआणी

खुशी अजाणी हत्थ छुडा के दोवे निक्कीआ वाहवा अड्डी
ईकण दौडी, जीकण कोई बालडी दौडे पैरो वाहणी

पहिला कण्डा सस्कार दा, दूजा कण्डा लोक-लाज दा
तीजा कण्डा धन-दौलत दा, खतरे जीकण कई छिलतरा

तलीआ विचो कण्डे कढदी पोटे घुटदी, लहू पूझदी
मीला-मीला पैर न्गादी अप्पड पहुँची खुशी निमाणी

अगला पैर अगाह नू जावे पिछला पैर पिछाह नू आवे
'वाज जिस तरा असलो तेरी नजर जिस तरा बडी बेगानी

दोचित्ती दा तिखा कण्डा अड्डी दे विच्च ईकण खुब्भा
अकल इलम दा नहू हारिआ खुब्भ गया है कित्थो ताणी

सारा पैर सुज्जदा जावे जहिर जिहा फैलदा जावे
हक्की-वक्की भुज्जे बैठी रोण लग्ग पई खशी अज्जाणी

ख़ुशी

दूर कही से आवाज आई—आवाज जैसे तेरी हो
कानो ने गहरी सास ली, जीवन-वाला काप उठी

मासूम खुशी हाथ छुडा कर दोना नन्ही बाँह फैला कर
एक बालिका की तरह नगे पाँव भाग उठी

पहला काँटा सस्कार का, दूसरा काँटा लोक-लाज का
तीसरा काँटा धन-दौलत का, खतरे जैसे कितने काँटे

तलवो से काँटे निकालती पोर दबाती लहू पोछती
मीला-कोसो लँगडाती हुई मासूम ख़ुशी वहाँ आ पहुँची

अगला पाँव आगे को बढे, पिछला पाँव पीछे को मुडे
आवाज जैसे बिल्कुल तेरी, नज़र जैसे बिल्कुल बेगानी

असमजस का तीखा काटा एडी मे इस तरह चुभ गया
अक्ल इल्म के नाख़ून हार गए, जाने काँटा कहाँ तक उतर गया

सारा पाँव सूज गया है, ज़हर-सा फैल रहा है
हैरान-परेशान जमीन पर बैठी मासूम ख़ुशी रो उठी है

साल मुबारक !

जिवें सोच दी कघी विच्चो टुट्ट गया इक ददा
जिव समझ दे झग्गे उत्ते लग गई इक खुन्घी
जिवे सिदक दी अख विच अज चुभ गया इक तीला
नीदर ने जिओ उगला दे विच सुपने दा इक कोला फडिआ
नवा साल अज ईकण चढिआ

जीकण दिल दी पक्ति विच्चो दुझ गया इक अक्खर
जिओ विशवास दे कागज उत्ते डुल्ह गई अज सिआही
जिवे समे दे होटा विचो निकल गया इक हउका
आदम जात दीआ अक्खा विच जीकण कोई अथरू अडिआ
नवा साल अज ईकण चढिआ

जिवें इशक दी जीभ दे उत्ते उठ पिआ इक छाला
सभिअता दीआ बाहवा विचो भज्ज गई इक चूडी
तवारीख दी मुदरी विच्चो डिग्ग पिआ इक थेवा
धरती ने जिऊ अबर दा इक बडा उदास जिहा खत पढिआ
नवा साल अज ईकण चढिआ

साल मुबारक!

जैसे सोच की कंघी में से एक दंदा टूट गया
जैसे समझ के कुर्ते का एक चीथड़ा उड़ गया
जैसे आस्था की आँखों में एक तिनका चुभ गया
नींद ने जैसे अपने हाथों में सपने का जलता कोयला पकड़ लिया
नया साल कुछ ऐसे आया

जैसे दिल के फिकरे से एक अक्षर बुझ गया
जैसे विश्वास के कागज पर सियाही गिर गई
जैसे समय के होंठों से एक गहरी साँस निकल गई
और आदमजात की आँखों में जैसे एक आँसू भर आया
नया साल कुछ ऐसे आया

जैसे इश्क की जबान पर एक छाला उठ आया
सभ्यता की बाँहों में से एक चूड़ी टूट गई
इतिहास की अँगूठी में से एक नीलम गिर गया
और जैसे धरती ने आसमान का एक बड़ा उदास-सा खत पढ़ा
नया साल कुछ ऐसे आया

माया

(प्रसिद्ध चित्रकार विनसैंट वानगॉग दी कलपित प्रेमिका माया नू !)

परीए नी परीए ! हूरा शाहजादीए !
गोरीए विनसैंट दीए ! सच किओ वणदी नही ?

हुसन काहदा ! इश्क काहदा ! तू कही अभिसारिका !
अपणे किसे महिबूब दी आवाज तू सुणदी नही

दिल दे अन्दर चिणग पा के साह
सुलगदे अगिआर कितने तू कदे गिदणी नही

काहदा हुनर ! काहदी कला ! तरला है इह इक जीऊण दा
सागर तखईअल दा तू कदे मिणदी नही

परीए नी परीए ! रा शाहजादीए !
खिआल तेरा पार ना—उरवार देंदा

रोज सूरज ढूढदा है, मूह कित दिसदा नही
मूह तेरा जो रात नू इकरार देदा है

तडप किसनू आख दे ने तू नही इह जाणदी,
क्यो किसे तो ज़िन्दगी कोई वार देंदा है !

दोवें जहान आपणे लादा हैं कोई खेड ते
हसदा है नामुराद ते फिर हार देदा है

माया

(प्रसिद्ध चित्रकार विंसेंट वानगॉग की कल्पित प्रेमिका माया से)

अप्सरा ओ अप्सरा ! शहज़ादी ओ शहज़ादी !
विंसेंट की गोरी ! तुम सच क्यो नही बनती ?

यह कैसा हुस्न और कैसा इश्क ! और तू कैसी अभिसारिका !
अपने किसी महबूब की तू आवाज़ क्यो नही सुनती ?

दिल मे एक चिनगारी डाल कर जब कोई सास लेता है
कितने अगारे सुलग उठते हैं, तू उन्हे क्यो नही गिनती ?

यह कैसा हुनर और कैसी कला ! जीने का एक बहाना है
यह तख़य्युल का सागर तू कभी क्यो नही नापती ?

अप्सरा ओ अप्सरा ! शहज़ादी ओ शहज़ादी !
तेरा खयाल न आर देता है न पार देता है

सूरज रोज़ ढूढता है मुंह कही दिखता नही
तेरा मुंह, जो रात को इकरार देता है

तडप किसे कहते हैं, तू यह नही जानती
किसी पर कोई अपनी जिंदगी क्यो निसार करता है

अपने दोनो जहा कोई दाव पर लगाता है
नामुराद हँसता है और हार जाता है

परीए नी परीए ! हूरा शाहज़ादीए !
लक्खा खिआल इस तरा औणगे टुर जाणगे

अरगवानी ज़हिर तेरा रोज़ कोई पी लवेगा
नकश तेरे रोज़ जादू इस तरा कर जाणगे

हस्सेगी तेरी कलपना तडपेगा कोई रात-भर
साला दे साल इस तरा, इस तरा खुर जाणगे

हुनर भुक्खा रोटीए ! प्यार भुक्खा गोरीए !
कितने कु तेरे वानगॉग इस तरा मर जाणगे !

परीए नी परीए ! हूरा शाहज़ादीए !
हुसन काहदी खेड है इश्क जद पुगदे नही

रात है काली वडी उमरा किसे ने वालीआ
चन्न सूरज कहे दीवे अजे वी जगदे नही

वुत्त तेरा सोहणीए ! ते इक सिट्टा कणक दा
काहदीआ इह धरतीआ अजे वी उगदे नही

हुनर भुक्खा रोटीए ! प्यार भुक्खा गोरीए !
काहदा है रुक्ख निजाम दा, फल कोई लगदे नही •

तेरा यह सुर्ख जहर कोई रोज़ पी लेगा
और तेरे नक्श हर रोज जादू कर जायेंगे

तेरी कल्पना हँसेगी, कोई रात-भर तड़पेगा
और वरस के वरस इस तरह बीत जायेंगे

हुनर भूखा है, ऐ रोटी ! प्यार भूखा है, ऐ गोरी !
तेरे कितने वानगॉग इस तरह मर जायेंगे !

अप्सरा ओ अप्सरा ! शहज़ादी ओ शहजादी !
हुस्न कैसा खेल है कि इश्क जीत नही पाता

रात जाने कितनी काली है—उम्र को भी जला के देख लिया
चांद-सूरज कैसे चिराग है कोई जल नही पाता

ऐ अप्सरा ! तुम्हारा बुत और गेहूँ की एक बाली
वह कैसी धरतिया हैं कुछ भी उग नही पाता

हुनर भूखा है, ऐ रोटी ! प्यार भूखा है, ऐ गोरी !
निज़ाम का पेड कैसा है, जिसमे कोई फल नही आता

हादसा

वरिहा दी इक आरी हस्से
हादसिया दे तिखे ददे
अचणचेती पावा टुट्टा
अबर दी इस चौकी उत्तो
डिग पिआ शीशे दा सूरज
अक्खा विच्च ककरा पईआ
नीझ मेरी अज जखमी होई
दुनिआ शाइद अजे वी वस्से
नीझ मेरी नू कुझ ना दिस्से

हादसा

बरसो की आरी हँस रही थी
घटनाओ के दाँत नुकीले थे
अकस्मात् एक पाया टूटा
आसमान की चौकी पर से
शीशे का सूरज फिसल गया
आँखो मे ककड छितरा गए
और नजर जख्मी हो गई
कुछ दिखाई नही देता
दुनिया शायद अब भी बसती होगी।

दुद्ध दी बून्द

मौत मेरी इक गल्ल चरोकी
कदी-कदी मैं उठ्ठा सोचा
चल्ला फुल प्रवाह आवा मैं
लाश दा करजा लाह् आवा मैं
हर घटना समझा सकदी हा
इक घटना समझा नहीं सकदी

लाश नू हुन्दी भुक्ख लाश दी
वाझ ना होवे कुक्ख लाश दी

हारे कुक्ख लाश दी हारे
मोई कुक्ख नू ममता मारे

लाश दा करजा लाह् सकदी हा
कुक्ख दा करजा कौण उतारे

कदे-कदे मैं उठ्ठा सोचा
कुक्ख दी लाल वही नू पाडा
अपणा दसखत आप छुपावा
इस करजे तो मुक्कर जावा

उठदी पैर दहलीजे रखदी
कुक्ख दी चोरी मारे मैंनू
लाश मेरी दी छाती विच्चो
सिम्म पवे इक बून्द दुद्ध दी

दूध की बूंद

मेरी मौत, इक पुरानी बात है
कभी-कभी उठती हूँ, सोचती हूँ—
चलूं, नदी मे फूल डाल आऊँ
लाश का कर्ज उतार आऊँ
हर घटना समझा सकती हूँ
यह घटना समझा नही सकती

लाश को एक लाश की भूख होती है
लाश की कोख बाँझ नही होती

लाश की कोख हार जाती है
मर चुकी कोख को ममता मारती है

लाश का कज उतार सकती हूँ—
कोख का कर्ज कैसे उतारूँ ?

कभी-कभी उठती हूँ, सोचती हूँ
कोख का वही-खाता फाड दूं
अपने दस्तखत आप ही छुपा लू
इस कर्ज से मुकर जाऊँ

उठती हूँ, दहलीज पर पाँव रखती हूँ
कोख की चोरी मुझे मारती है
और मेरी लाश की छाती से
दूध की एक बूंद टपक पटती है

सरदल अपनी था तो हिल्ले
उसदी थावें पैर घलोवे
हन्नुआ नू कोई तर सकदा ए
दुद्ध दी बूंद पार ना होवे ।

रात मेरी

रात मेरी जागदी तेरा खयाल सौं गया

सूरज दा रुक्ख खड़ा सी किरना किसे ने तोड़ीआ
चन्न दा गोटा किसे ने अबर तो अज ऊधेड़िआ

किओं किसे दी नींद नू सुपने बुलावा दे गए
तारे घलोते रह गए अबर ने बूहा ढो लिआ

इह जखम मेरे इश्क दे सीते सी तेरी याद ने
अज तोड़ के टाके असा धागा वी तैनू मोड़िआ

कितनी कु दरदनाक है अज वीड़ मेरे इश्क दी
सभना उडीका दा असा पत्तरा इहदे 'चो पाड़िआ

धरती दा हउका निकलिआ असमान ने सिसकी भरी
फुल्ला दा सी इक काफिला तत्ते थला 'चो गुजरिआ

कणक दी इक महिक सी बारूद ने अज पी लई
ईमान सी इक अमन दा आह वी किते विकदा पिआ

दुनिआ दे चानण नू अजे सदीआ उलाभे देंदीआ
इस प्यार दी रुत्ते तुसा नफरत नू कीकण बीजिआ

इनसान दा इह खून है इनसान नू पुच्छदा पिआ
ईसा दे सुच्चे होठ नू सूली ने कीकण चुम्मिआ

रात मेरी

मेरी रात जाग रही है, तेरा खयाल सो गया

सूरज का पेड खडा था, किसी ने किरणे तोड ली
और किसी ने चाद का गोटा आसमान से उधेड दिया

किसी की नीद को सपनो ने क्यो बुलावा दिया
सितारे खडे रह गये, आसमान ने दरवाजा वन्द कर दिया

मेरे इश्क के ज़ख्म तेरी याद ने सिये थे
आज मैं ने टाके खोल कर वह धागा तुझे लौटा दिया

तेरे इश्क की पाक किताब कितनी ददनाक है
आज मैं ने इन्तजार का सफा इस मे से फाड दिया

धरती ने गहरी सास ली, आसमान ने सिसकी भरी
फूलो का एक काफिला था, आज वह रेगिस्तान से गुज़रा

गेहूँ की एक खुशबू थी, आज बारूद ने पी ली
अमन का एक ईमान था, वह भी कही बिक रहा

दुनिया की रोशनी से सदियाँ शिकवा करती हैं
इस मुहब्बत के मौसम मे तुम ने नफरत को कैसे बो दिया

यह इनसान का खून है, इनसान से सवाल करता है
ईसा के पाक होठो को सूली ने कैसे चूम लिया !

इह किस तरा दी रात सी अज दौड के लग्घी जदो
चन्न दा इक फुल्ल सी पैरा दे हेठा आ गया

सूरज दा घोडा हिणकिआ चानण दी काठी लहि गई
उमरा दे पैंडे मारदा धरती दा पाधी रो पिआ

इह रात किओ अज त्रहि गई, कालख है कुझ कम्बदी पई
किधरे किसे विशवास दा शाइद टटहिणा चमकिआ

राता दी अक्ख फरकदी इह खोरे चग्गा सगण है
अवर दी उच्ची कन्ध 'ते चानण दा तीला लिशकिआ

की करे टाहणी कोई फुल्ला दी ममता मारदी
इनसान दी तकदीर ने इनसान नू अज आखिआ---

हुसना ते इश्का वालिओ ! जावो लिआवो मोड के
विशवास दा इक जातरु जित्थे वी किधरे टुर गया !

यह किस तरह की रात थी, आज जन भाग कर गुजरी
चाँद का इक फूल था, पैरो तले रौंदा गया

सूरज का घोडा हिनहिनाया, रोशनी की काठी उतर गई
उमर का सफर तय करता धरती का मुसाफिर रो दिया

यह रात आज क्यो ठिठक गई, सियाही भी कुछ कांप रही
कही किसी विश्वास का शायद जुगनू चमक उठा

रात की आंख फडकती है—यह शायद अच्छा शगुन है
आसमान की ऊँची दीवार पर रोशनी का एक तिनका चमक उठा

कोई टहनी क्या करे ! फूलो की ममता सताती है
इनसान की तकदीर ने आज इनसान से कहा
हुस्न और इश्क वालो, जाओ ! लौट जाओ !
विश्वास का एक यात्री जहाँ कही भी चला गया।

दाग

कच्ची कन्ध मुहब्बत वाली लिम्बिआ अते पोचिआ मत्था
फिर वी इसदी वक्खी विच्चो राती इक खरेपड लत्था

असलो जिवें मुघार हो गया, कन्ध दे उत्ते दाग पै गया

इह दाग अज रु रु करदा, इह दाग अज बुल्लीहा टेरे
इह दाग अज अडी पै गया, इह दाग अज छडीआ मारे

बिट बिट तकदा मेरी वल्ले, अपणी मा दा मूह सिझाणे
बिट बिट तकदा तेरी वल्ले, अपने पिओ दी पिठ्ठ पछाणे

बिट बिट तकदा दुनीआ वल्ले, सौण लई पघूडा मग्गे,
दुनीआ दे कानूना कोलो खेडण लई छणकणा मग्गे

कुझ ते मुक्खो बोल नी माए एस दाग नू लोरी देवा
कुझ ते मुक्खो बोल वावला एस दाग नू कुच्छड चुक्का

दिल दे वेहडे रात पै गई एस दाग नू किज सुआवा !
दिल दे कोठे सूरज चढिआ एस दाग नू किज छुपावा !

दाग

मुहब्बत की कच्ची दीवार लिपी हुई, पुती हुई
फिर भी इसके पहलू से रात एक टुकडा टूट गिरा

बिल्कुल जैसे सूराख हो गया, दीवार पर दाग पड गया

यह दाग आज रू रू करता, यह दाग आज होठ बिसूरे
यह दाग आज जिद करता है, यह दाग कोई बात न माने

टुकुर टुकुर मुझ को देखे, अपनी माँ का मुँह पहचाने
टुकुर टुकुर तुझ को देखे, अपने बाप की पीठ पहचाने

टुकुर टुकुर दुनिया को देखे, सोने के लिए पालना माँगे
दुनिया के काननो से खेलने को झुनझुना मागे

माँ ! कुछ तो मुँह से बोल, इस दाग को लोरी सुनाऊँ
बाप ! कुछ तो कह, इस दाग को गोद मै ले लूँ

दिल के आगन मे रात हो गई, इस दाग को कैसे सुलाऊँ !
दिल की छत पर सूरज उग आया, इस दाग को कहाँ छुपाऊँ !

अन्नदाता

अन्नदाता ! मेरी जीभ 'ते तेरा लूण ऐ
तेरा ना मेरे बाप दिआ होठां ते
ते मेरे इस बुत्त विच मेरे बाप दा खून ऍ

मैं किवे बोला ?
मेरे बोलण तो पहिला बोल पैदा ए तेरा अन्न
कुझ कु बोल सन, पर असी अन्न दे कीडे
ते अन्न भार हेठा ओह दब्बे गए हुन

अन्नदाता ! कामे मा बाप, दित्ते कामे ने जम्म
कामे दा कम्म है सिरफ कम्म
बाकी वी ता कम्म कर दै इहो ही चम्म
ओह वी इक कम्म, इह वी इक कम्म

अन्नदाता ! मैं चम्म दी गुड्डी खेड लै खिडा लै
लहू दा प्याला पी लै पिला लै
तेरे साहवे खडी हा अैह, वरतण दी शै, जिवें चाहे वरत लै !
उग्गी हा, पिसी हा, गुज्झी हा, विली हा
ते अज तत्ते तवे उत्ते जिवें चाहे परत लै !
मैं बुरकी तो वद्ध कुझ नही, जिवे चाहे निगल लै !
तू लावे तो वद्ध कुझ नही, जिवे चाहे पिघल लै !
लावे 'च लपेट लै ! कदमा 'ते खडी हा, वाहवा 'च समेट लै !

अन्नदाता ! मेरी जबान ते इनकार ?
इह किवे हो सकदै !
हा प्यार इह तेरे मतलब दी शै नही

अन्नदाता

अन्नदाता ! मेरी जबान पर तुम्हारा नमक है
तुम्हारा नमक मेरे बाप के होठो पर
और मेरे इस बुत मे मेरे बाप का खून है

मैं कैसे बोलू ?
मेरे बोलने से पहले तेरा अनाज बोल पडता है
कुछ-एक बोल थे, पर हम अनाज के कीडे !
और अनाज के भार तले वे बोल दब कर रह गये

अन्नदाता ! मेरे माता-पिता कामगर, कामगर की सन्तान कामगर
कामगर का काम सिर्फ काम
बाकी भी तो काम यही चाम करता है,
वह भी एक काम, यह भी एक काम

अन्नदाता ! मैं माँस की गुडिया, खेल ले, खिला ले
लहू का प्याला, पी ले, पिला ले
तेरे सामने खडी हूँ, इस्तेमाल की चीज, कर लो इस्तेमाल !

उगी हूँ, पिसी हूँ, बेलन से बिली हूँ
आज गर्म तवे पर जैसे चाहो उलट लो !
मैं एक निवाले से बढकर कुछ नही, जैसे चाहो निगल लो !
तुम लावे से बढ कर कुछ नही, जैसे चाहो पिघल लो !
लावे मे लपेट लो ! कदमो मे खडी हूँ, बाँहो मे समेट लो !

अन्नदाता ! मेरी जबान और इनकार ?
यह कैसे हो सकता है !
हा प्यार यह तेरे मतलब की शै नही।

ओ मेरे दोस्त ! मेरे अजनबी !

इक वार अचानक तू आया—
ता वक्त असलों हैरान, मेरे कमरे 'च खलोता रह गया
तरकाला दा सूरज लहिण वाला सी पर लहि ना सकिआ
ते घडी कु उस ने डुवण दी किस्मत विसार दित्ती
फिर अज़ला दे नेम ने इक दुहाई दित्ती,
ते वक्त ने—बीते खलोते छिणा नू तकिआ
ते घाबर के बारी 'चो छाल मार दित्ती ।
उह बीते खलोते छिणा दी घटना
हुण तैनू वी वडी असचरज लगदी है
ते मैनू वी वडो असचरज लगदी है
ते शायद वक्त नू वी फेर उह गलती गवारा नही—
हुण सूरज रोज़ वेले सिर डुब जादा हैं
ते हनेरा रोज मेरी छाती विच खुभ जादा है
पर बीते-खलोते छिणा दा इक सच है
हुण तू ते मैं, मनणा चाहिए जा ना इह वखरी गल्ल है
पर उस दिन वक्त ने जद बारी 'चो छाल मारी सी
ते उस दे गोडिआ विचो जो लहू सिमिआ सी
उह लहू मेरी बारी दे थल्ले अजे तक जम्मिआ होइआं

ऐ मेरे दोस्त ! मेरे अजनबी !

एक बार अचानक—तू आया
वक्त बिल्कुल हैरान मेरे कमरे मे खडा रह गया।
साझ का सूरज अस्त होने को था, पर हो न सका
और डूबने की किस्मत वह भूल-सा गया।
फिर आदि के नियम ने एक दुहाई दी,
और वक्त ने उन खडे क्षणो को देखा
और खिडकी के रास्ते बाहर को भागा।
वह बीते और ठहरे क्षणो की घटना—
अब तुझे भी एक बडा आश्चय होता है
और मुझे भी एक बडा आश्चर्य होता है
और शायद वक्त को भी फिर वह गलती गवारा नही,
अब सूरज रोज़ वक्त पर डूब जाता है
और अँधेरा रोज मेरी छाती मे उतर आता है।
पर बीते और ठहरे क्षणो का एक सच है—
अब तू और मैं मानना चाहे या नही, यह और बात है।
पर उस दिन वक्त जब खिडकी के रास्ते बाहर को भागा
और उस दिन जो खून उसके घुटनो से रिसा
वह खून मेरी खिडकी के नीचे अभी तक जमा हुआ है

इक मुलाकात

कई वरिहा दे पिच्छो अचानक इक मुलाकात
ते दोहा दी जिंद इक नज़म वाग कम्वी

साहवे समुची रात सी
पर अद्धी नज़म इक गुठ विच लग्गी रही
ते अद्धी नजम इक गुठ विच लग्गी रही

फिर सवेर सार—
असी कागज के पाटे होये टुकडिया दी तराह मिले
मैं आपणे हत्थ विच उहदा हत्थ फडिआ
उह आपणी वाह विच मेरी वाह लीती

ते फेर असी दोवे इक ससर दी तरहा हसे
ते कागज नू इक ठडे मेज ते रख के
उस सारी नजम ते इक लीक फेर दित्ती

एक मुलाकात

कई वरसो के बाद अचानक एक मुलाकात
हम दोनो के प्राण एक नज्म की तरह काँपे

सामने एक पूरी रात थी—
पर आधी नज्म एक कोने मे सिमटी रही
और आधी नज्म एक कोने मे बैठी रही

फिर सुबह-सवेरे—
हम कागज़ के फटे हुए टुकडो की तरह मिले
मैंने अपने हाथ मे उस का हाथ लिया
उस ने अपनी बाँह मे मेरी बाह डाली

और हम दोनो एक सैसर की तरह हँसे
और कागज़ को एक ठण्डी मेज पर रख कर
उस सारी नज्म पर लकीर फेर दी

कुमारी

मैं तेरी सेज ते जद पैर धरिआ सी
मैं इक नही सा—दो सा
इक सालम व्याही ते इक सालम कुआरी
सो तेरे भोग दी खातिर—
मैं उस कुआरी नू कतल करना सो
मैं कतल कीता सी—
इह कतल जो कानूनन जायज हुदे हन,
सिफ उन्हा दी जिल्लत नाजायज हुदी है।
ते मैं उस जिल्लत दा जहर पीता सी
ते फिर प्रभात वेले—
इक लहू विच भिज्जे मैं आपणे हत्थ वेखे सन,
हत्थ धोते सन—
बिल्कुल उस तरहा ज्यो होर मुशकी अग धोणे सी।
पर ज्यो ही मैं शीशे दे साहमणे होई
उह साहमणे खलोती सी
उही, जो आपणी जाचे मैं राती कतल कीती सी
ओ खुदाया !
की सेज दा हनेरा वहुत गाढा सी ?
मैं किहनू कतल करना सी, ते किहनू कतल कर बैठी

क्वाँरी

मैंने जब तेरी सेज पर पैर रखा था
मैं एक नही थी—दो थी
एक समूची ब्याही और एक समूची क्वाँरी
तेरे भोग की खातिर—
मुझे उस क्वाँरी को कत्ल करना था
मैं ने कत्ल किया था—
ये कत्ल, जो कानूनन जायज होते ह,
सिर्फ उन की जिल्लत नाजायज होती है।
और मैंने उस जिल्लत का जहर पिया था
फिर सुबह के वक्त—
एक खून मे भीगे अपने हाथ देखे थे,
हाथ धोये थे—
बिल्कुल उस तरह ज्यो और गँदले अग धोने थे,
पर ज्यो ही मैं शीशे के सामने आई
वह सामने खडी थी
वही, जो अपनी तरफ से मैं ने रात कत्ल की थी
ओ खुदाया!
क्या सेज का अँधेरा बहुत गाढा था?
मुझे किसे कत्ल करना था और किसे कत्ल कर बैठी

आत्ममिलन

मेरी सेज हाजर है
पर जुत्ती ते कमीज वागण
तू अपणा बदन वी उतार देह
परा मूढे 'ते रख देह
कोई खास गल्ल नही
इह आपणे-आपणे देस दा रिवाज है।

आत्ममिलन

मेरी सेज हाजिर है
पर जूते और कमीज की तरह
तू अपना बदन भी उतार दे
उधर मूढे पर रख दे
कोई खास बात नहीं—
यह अपने-अपने देश का रिवाज है।

खाली जगह

सिफ दो रजवाडे सन—
इक ने मैंनू ते उहनू बेदखल कीता सी,
ते दूजे न असा दोहा ने त्याग दित्ता सी।

नगे असमान दे हेठा—
मैं किन्ना ही चिर
पिंडे दे मीह विच भिजदी रही
उह किन्ना ही चिर
पिंडे दे मींह विच गलदा रहा।

फिर उमरा दे मोह नू—
इक ज़हर वाग पी के
उहदे कम्बदे हत्थ ने मेरा हत्थ फडिया
चल ! छिणा दे सिर ते इक छत पाइये
ओह वेख ! परा—साहमणे, औथे
सच अते झूठ दे विचकार—कुछ जगाह खाली है

खाली जगह

सफ़ दो रजवाडे थे—
एक ने मुझे और उसे बेदखल किया था
और दूसरे को हम दोनो ने त्याग दिया था।

नग्न आकाश के नीचे—
मैं कितनी ही देर—
तन के मेंह मे भीगती रही,
वह कितनी ही देर
तन के मेह मे गलता रहा।

फिर बरसो के मोह को—
एक जहर की तरह पी कर
उसने कांपते हाथों से मेरा हाथ पकडा!
चल! क्षणो के सिर पर एक छत डालें
वह देख! परे—सामने, उधर
सच और झूठ के बीच—कुछ जगह खाली है

इक मुलाकात

मैं चुप शान्त ते अडोल खड़ी सा
सिफ कोल वगदे समुदर दे विच तुफान सी
फिर समुदर नू रब जाणे की खयाल आया
उस आपणे तुफान दी इक पोटली बन्नी
मेरे हत्था 'च फडाई, ते हस्स के कुछ परहा हो गिआ ·

हैरान सा—पर उस दा चमत्कार फड़ लिआ
पता सी—कि जिही घटना कदे सदीआ 'च हुंदी है ·

लक्खा खयाल आये
मत्थे 'च झिलमिलाये

पर खलोती रह गई कि इस नू चुक के
अज आपणे शहर विच मैं किवे जावागी ?
मेरे शहर दी हर गली भीडी है
मेरे शहर दी हर छत्त नीवी है
मेरे शहर दी हर कध चुगली है

मैं सोचिआ—जे तू किते लभे
ता समुदर दी तरहा इहनू छाती ते रख के
असी दो किनारिआ दी तरहा हस्स सकदे सा

ते नीवीआ छत्ता
ते भीडीआ गलीआ दे शहर विच वस्स सकदे सा ·

एक मुलाकात

मैं चुप, शान्त और अडोल खडी थी
सिर्फ पास वहते समुद्र मे तूफान था
फिर समुद्र को खदा जाने क्या खयाल आया
उस ने तूफान की एक पोटली सी बाँधी
मेरे हाथो मे थमाई और हँस कर कुछ दूर हो गया

हैरान थी पर उस का चमत्कार ले लिया
पता था कि इस तरह की घटना कभी सदियो मे होती है

लाखो खयाल आये
माथे मे झिलमिलाये

पर खडी रह गई कि इस को उठा कर
अब अपने शहर मे मैं कैसे जाऊँगी ?
मेरे शहर की हर गली तग है
मेरे शहर की हर छत नीची है
मेरे शहर की हर दीवार चुगली है

सोचा अगर तू कही मिले
तो समुद्र की तरह इसे छाती पर रख कर
हम दो किनारो की तरह हँस सकते थे

और नीची छतो—
और सँकरी गलियो के शहर मे बस सकते थे

पर सारी दुपहर तैनू लभदिआ बीती
ते आपणी अग्ग दा मैं आपे ही घुट पीता
मैं इक 'करला किनारा, किनारे नू खोर लीता,
ते दिहु लहिण वेले—
समुदर दा तुफान समुदर नू मोड दित्ता

हुण रात पैण लगी ता तू मिलिआ एँ
तू वी उदास, चुप, शान्त, ते अडोल
मैं वी उदास, चुप, शान्त, ते अडोल
सिफ—दूर वगदे समुदर दे विच तुफान है

, पर सारी दोपहर तुझे ढूँढते बीती
और अपनी आग का मैं ने आप ही घूंट पिया
मैं एक अकेला किनारा, किनारे को मैं ने ढहा लिया,
और जब दिन ढलने को था—
समुद्र का तूफान, समुद्र को लौटा दिया

अब रात घिरने लगी तो तू मिला
तू भी उदास, चुप, शान्त और अडोल
मैं भी उदास, चुप, शान्त और अडोल
सिर्फ—दूर बहते समुद्र मे तूफान है

डेढ घटे दी मुलाकात

डेढ घटे दी मुलाकात
ज्यों वदल दा इक टोटा
अज सूरज दे नाल टाकीआ,
उधेड लत्थी हा,
पर कुझ नही वणदा, ते जापदा—
कि सूरज दे लाल झग्गे विच
इक वदल किसे उणीआ है।

डेढ घटे दी मुलाकात
अज साहमणे उस चौक विच
इक सन्तरी वाग खडी
ते मेरीआ सोचा दा लाघा
उस हत्थ दे के रोक दित्ता है
जाणे खुदा कि मैं की आखीआ सी
ते जाणे खुदा तू की सुणीआ है।

डेढ घटे दी मुलाकात
सोचदी हा आदिवासी औरत दी तरहा
मैं इक चिलम वाल ला
ते डेढ घटे दा तम्बाकू
इक अग्ग दे विच रख के मै पी लवा

डेढ घण्टे की मुलाकात

डेढ घण्टे की मुलाकात
जैसे वादल का एक टुकडा
आज सूरज के साथ टाँका,
उधेड हारी हूँ
पर कुछ नही वनता, और लगता है
कि सूरज के लाल कुर्ते मे
यह वादल किसी ने वुन दिया है !

डेढ घण्टे की मुलाकात
सामने उस चौक मे
एक सन्तरी की तरह खडी
और मेरी सोचो का गुज़रना
उस ने हाथ दे कर रोक दिया
खुदा जाने मैं ने क्या कहा था
और जाने खुदा तू ने क्या सुन लिया ।

डेढ घण्टे की मुलाकात
सोचती हूँ आदिवासी औरत की तरह
मैं एक चिलम सुलगा लूँ
और डेढ घण्टे का तम्वाकू
इस आग मे रख कर पी लूँ

एस तो पहला कि मेरी सोच घबराये
ते गलत मोड परत जावे
एस तो पहला कि बदल नू लाहदीआ
इह सूरज ही पाट जावे
एस तो पहला कि मुलाकात दा चेता
इक नफरत 'च बदल जावे

डेढ घण्टे दा धुआ
कुझ मैं पी लवा कुझ पौण पी लवे
एस तो पहला कि इस दा हरफ
मेरी जा तेरी जबान 'ते आवे
एस तो पहला कि मेरा जा तेरा कन
इस दे जिकर नू सुणे

ते एस तो पहला कि म'
औरत जात दी तौहीन बण जावे
ते एस तो पहला कि औरत
मर्द जात दी हत्तक दा कारन बणे
एस तो पहला   एस ता पहला

इससे पहले कि मेरी सोच घबराये
और गलत मोड पर मुड जाये
इससे पहले कि बादल को उतारते
यह सूरज टूट जाये
इस से पहले कि मुलाकात की याद
एक नफरत में बदल जाये

डेढ घण्टे का धुआं
कुछ मैं पी लू, कुछ पवन पी ले
इस से पहले कि इस का लफ्ज़
मेरी या तेरी जबान पर आये
इस से पहले कि मेरा या तेरा कान
इस के जिक्र को सुने

और इस से पहले कि मर्द—
औरत-ज़ात की तौहीन बन जाये
और इस से पहले कि औरत—
मर्द जात की हतक का कारण बने
इस से पहले   इस से पहले

8964

इक घटना

तेरीआ यादा
बहुत देर होई जलावतन होईआ
जीउंदिआ कि मोईआ   कुछ पता नही ।

सिर्फ इक वारी इक घटना वापरी
खयाला दी रात बडी डूधी सी
ते एनी चुप सी
कि पत्ता खडकिआ वी
वरिहा दे कन नभकदे ।

फेर तिन वारा जापिआ
छाती दा बूहा खडकदा
ते पोले पैर छत्त 'ते चढदा कोई
ते नहुआ दे नाल पिछली कंध खुरचदा ।

तिन वारा उठके मैं कुडीआ टोहीआ
हनेरे नू जिस तरहा इक गर्भ पीड सी
उह कदे कुछ कहिंदा, ते कदे चुप हुदा
ज्यो अपनी आवाज न ददा दे विच पीहदा
ते फेर जीउदी जागदी इक शै
ते जीउदी जागदी आवाज़ ।

"मैं कालिआ कोहा तो आई हा
पाहरूआ दी अख तो इस वदन नू चुरादी

एक घटना

तेरी यादें
बहुत दिन बीते जलावतन हुईं
जियी कि मरी—कुछ पता नही ।

सिर्फ एक बार—एक घटना घटी
ख्यालो की रात बडी गहरी थी
और इतनी स्तब्ध थी
कि पत्ता भी हिले
तो बरसो के कान चौंकते ।

फिर तीन बार लगा
जैसे कोई छाती का द्वार खटखटाये
और दबे पाव छत पर चढता कोई
और नाखूनो से पिछली दीवार को कुरेदता

तीन बार उठ कर मैं ने साँकल टटोली
अँधेरे को जैसे एक गर्भ-पीडा थी
वह कभी कुछ कहता और कभी चुप होता
ज्यो अपनी आवाज़ को दाँतो मे दबाता
फिर जीती-जागती एक चीज़
और जीती-जागती आवाज़ ।

"मैं काले कोसो से आई हूँ
प्रहरियो की आख से इस बदन को चुराती

बडी मादी
पता है मैनू कि तेरा दिल आबाद है
पर किते सुन्नी सखणी कोई था मेरे लई ?

सुन्न सखण बडी है पर तू"
त्रभक के मैं आखिआ—
"तू जलावतन नही कोई था नही
मैं ठीक कहदी हा कि कोई था नही तेरे लई
इह मेरे मस्तक मेरे आका दा हुक्म है"

ते फेर जीकण सारा हनेरा ही कब जादा है
उह पिछाह नू परती
पर जाण तो पहला उह उर्हा होई
ते मेरी होद नू उस इक वार छोहिआ
हौली जही
इज जिवे कोई वतन दी मिट्टी नू छोहदा है ·

धीमे से आती
पता है मुझे कि तेरा दिल आबाद है
पर कहीं वीरान सूनी कोई जगह मेरे लिए !"

सूनापन बहुत है पर तू"
चौंक कर मैं ने कहा—
"तू जलावतन—नहीं, कोई जगह नहीं
मैं ठीक कहती हूँ—कि कोई जगह नहीं तेरे लिए
यह मेरे तक, मेरे आका का हुक्म है !"

और फिर जैसे सारा अँधियारा कांप जाता है
वह पीछे को लौटी
पर जाने से पहले कुछ पास आई
और मेरे वजूद को एक बार छुआ
धीरे से—
ऐसे, जैसे कोई वतन की मिट्टी को छूता है

सफरनामा

गगाजल तो लैके वादका तीकण
इह सफरनामा है मेरी तिआस दा
सादा पवित्र जनम दे, सारा अपवित्र करम दा, इक सादा इलाज
ते किसे महबूब चेहरे नू उस उमरा दे गलास विच तकण दा जतन
ते आपणे पिंड दे उत्ता, इक सतपगाये जखम नू भूलण दी लोड

इह किने निकोन पत्थर हन—
जो किसे पाणी दे घुट बदले, मैं मंघ 'चो लघाए हन।
किने भविख हन—जो वरतमान तो बचाए हन
ते शायद वरतमान वी—मैं वरतमान तो बचाइआ है

सिफ इक खिआल आउंदा है
कई वार अउदा है—
जिऊ कई वार इक सारगी दा गज
अचानक किसे राग दी छाती दे विच खुभदा है।
जा चुपचाप इक पिआनो—
कालिआ त चिट्टिआ ददा द विच सगीत चबदा है।

इक खिआल अउदा है—
पर जिवे कोई मौत दा इक घुट्ट भरे
डरे, ते फेर छेती नाल उसदे खिआल दी उलटी करे
पर मोईआ छातीआ दे विच वी कुछ साह जीउदे हन
ते अटके साहवा दे नाल अज मैं आख सकदी हा
कि हर इक सफर सिरफ उत्थो शुरू हुदा है—
—जित्थे इह सफरनामे खतम हुदे हन।

सफरनामा

गगाजल से ले कर वोदका तक,
यह सफरनामा है मेरी प्यास का
सादा पवित्र जन्म के, सादा अपवित्र कर्म का, एक सादा इलाज
और किसी महबूब चेहरे को एक छलकते गिलास मे देखने का यत्न
और अपने बदन से एक बिल्कुल बेगाने ज़ख्म को भूलने की ज़रूरत

ये कितने तिकोन पत्थर हैं—
जो किसी पानी के घूंट-से गले से उतारे है
कितने भविष्य हैं जो वर्तमान से बचाये हैं
और शायद वर्तमान भी—मैं ने वर्तमान से बचाया है

सिर्फ एक खयाल आया है
कई बार आता है—
ज्यो कई बार एक सारगी का गज—
अचानक किसी राग की छाती मे चुभता है।
या चुपचाप एक पियानो —
काले और श्वेत दाँतो मे सगीत चबाता है।

एक खयाल आता है—
पर जैसे कोई मौत का एक घूंट भरे
डरे, और फिर जल्दी से उस खयाल की कै-सी करे
पर मरे सीनो मे भी कुछ साँसें जीती हैं
और अटकी सासो के साथ मैं कह सकती हूँ
कि हर एक सफर सिर्फ वही शुरू होता है
—जहाँ ये सफरनामे खतम होते हैं

गली दा कुत्ता

कई वरिहा दी गल्ल है—
जद तू ते मैं निखड़े
कोई पछतावा नही
सिफ—इक गल्ल मुझ समझ विच नही अउदी

तू ते मैं जद विदा कह रहे सा
ते साडा मकान विक रिहा सी
चौके दे सटउणे भाडे विहडे 'च पए सन—
शाइद मेरीआ जा तेरीआ अखा 'च वेखदे,
कुझ मूधे वी सन—
शाइद मुह छुपा रहे सी।

इक बूहे दी वेल सी मुरझाई जिही
शाइद तैनू ते मैनू कुझ कहि रही
—जा पाणी दी टटी नू उलाभा दे रही

इह सभ कुझ ते होर इहो जिहा
कदे चेते नही अउदा,
सिफ इक गल्ल कुझ वहुत याद अउदी है—

कि इक सडक दा कुत्ता—
कीकण, ते की सुखदा
इक सटखणे कमरे 'च वड गिआ
ते कमरे दा बूहा बाहरो दी बन्द हो गिआ

गली का कुत्ता

कई बरसो की बात है—
जब तू और मैं बिछुड़े
कोई पश्चाताप नहीं
सिर्फ—एक बात कुछ समझ मे नही आती

तू और मैं जब विदा कह रहे थे
और हमारा मकान बिक रहा था
चौके के खाली बर्तन आँगन मे पड़े थे—
 शायद मेरी या तेरी आँखो मे देखते,
कुछ औंधे भी थे—
 शायद मुँह छुपा रहे थे।

एक द्वार की लता मुरझाई-सी
शायद मुझ से और तुझ मे कुछ कह रही थी
 —या पानी के नल को उलाहना दे रही थी

यह सब कुछ और इस सरीखा
कभी याद नहीं आता
सिर्फ एक बात कुछ बहुत याद आती है—

कि एक सड़क का कुत्ता—
कैसे और क्या सूघता
एक खाली कमरे मे जा घुसा
और कमरे का द्वार बाहर से बन्द हो गया

फेर तीजे दिहाडे—
मकान दा सौदा जद नेपरे चढिआ
ते चाबीआ दे नाल असा नोटा नू वटाइआ
नवें मालक नू हर इक जदरा सौंपिआ
ते इक्क इक्क कमरा विखाइया
ता इक्क कमरे दे विच्च उस कुत्ते दी लाश सी .

मैं उसदा भौंकणा कदे कन्नी नही सुणिआ
—सिफ उस दी वो मुघी सी
ते उही वो, हुण वी अचानक—
मैंनू कई चीजा चो अउदी है

फिर तीसरे दिन—
मकान का सौदा जब निबट गया
और चाबियों से हम ने नोट बदले
नये मालिक को हर ताला जब सौंपा
और एक एक कमरा दिखाया
तो एक कमरे में उस कुत्ते की लाश थी

मैं ने उसका भौंकना कभी कानों न सुना
सिर्फ उस की बू सूंघी थी
और वही बू अब भी अचानक—
मुझे कई चीज़ों से आती है

तखलीकी अमल

नज़म, कदे कागज़ नू तक्के ते इज मुह मोडे
जिउ कागज़ पराइआ मर्द हुदा है

पर कदे, इक कजक जिउ करवे दा वरत रखदी है
ते उस रात उस नू इक सुपना जिहा अउदा है
अचानक कोई मरदावा अग छोहदा है
ते सुपने दे विच वी उहदा वदन कबदा है

पर कदे अग्ग चटदी उह त्रभक जादी
जाग पैंदी
गदराए अगा नू टोहदी
चोली दे बटन खोहलदी
चानणी दे बुक पिंडे ते पादी
ते पिंडा निचोडदी दा हत्थ सिसक जिहा जादा है

पिंडे दा हनेरा चटाई वाग विछदा
उह मूधी चटाई उत्ते लेटदी
उहदे तीले तोडदी
ते उहदा अग अग सुलग पैंदा है
ते उहनू जापदा, उहदे पिंडे दा हनेरा
किसे वलयान वाह विच टुटणा चाहुदा है

अचानक इक कागज़ अगाह हुदा है
ते उसदे कबदे हथा नू छोहदा है

रचना-प्रक्रिया

नज़्म कभी कागज को देखे और यूं मुंह मोडे
ज्यो कागज़ पराया मद होता है

पर कभी, एक क्वांरी जैसे करवे का व्रत रखती है
और उस रात उसे एक सपना-सा आता है।
सहसा कोई मर्दाना अग छूता है
और सपने मे उस का वदन कांपता है

पर कभी आग चाटती वह चौंक जाती
जाग पडती
गदराये अगो को टटोलती
चोली के बटनो को खोलती
चांदनी के चुल्लू तन पर डालती
और तन को सुखाती का हाथ सिसक सा जाता है

वदन का अँधेरा चटाई-सा बिछता
वह चटाई पर औंधी लेटती
उस के तिनके से तोडती
और उस का अग-अग सुलग पडता
और उसे लगता है कि उस के वदन का अँधेरा
किसी सबल बाँहो मे टटना चाहता है

अचानक एक कागज आगे को बढता है
और उस के कापते हाथो को छूता है

इक अग बलदा है
इक अग पिघलदा है
ते उह एक अजनबी हवाड सुघदी है
ते उहदा हत्थ—पिंडे 'च उतर आइआ लीका नू वेहदा है .

हत्थ उघलादा है, पिंडा उपरादा है
ते मत्थे दे उत्ते इक नेली जिही छुटदी
इक लम्बी लकीर टुटदी
ते साह—
जनम दी ते मौत दी दूहरी हवाड विच भिज जादा है .

इह सब कालीआ ते पतलीआ लीका
जिउ इक लीक दे कुझ टुकडे जहे हुदे
उह चुप ते हैरान, नुचडी खलोता, बेखदी
सोचदी—
कि कोई अनिआ होइआ है
उहदा कोई अग मोइआ है
शायद इक कुआरी दा गभपात इजे ही हुदा है .

एक अग जलता है
एक अग पिघलता है
और वह एक अजनबी गध सूघती
और उस का हाथ तन मे उतर आई लकीरो को देखता है

हाथ ऊँघता, वदन छटपटाता
और माथे पर पसीना-सा छूटता
एक लम्बी लकीर टूटती
और साँस—
जन्म की और मौत की दोहरी गध मे भीग जाती है

यह सब काली और पतली लकीरे
जैसे एक लम्बी चीख के कुछ टुकडे-से होते
वह चुप और हैरान निचुडी-सी खडी, देखती
सोचती—
कि कोई अन्याय हुआ है
उस का कोई अग मर गया है
शायद एक क्वाँरी का गभपात ऐसे ही होता है

अश्वमेध यज्ञ

इक चेतर दी पुनिआ सी—
कि चिट्टा दुध मेरे इश्क दा घोडा
देसा ते वदेसा नू गाहण तुरिआ
सारा शरीर सच वाग चिट्टा
ते सउले कन विरहा रग दे।
सोने दा इक पतरा उहदे मत्थे दे उत्ते
'इह दिग विजे दा घोडा—
कोई वलवान है ता इस नू फडे ते जित्ते'
ते जीकण इस यज्ञ दा इक नेम है—
इह जित्थे वी खलोता मैं गीत दान कीते
ते कई थावे मैं हवन तारिआ,
सो जिसने वी जितणा चाहिआ, वह हारिआ।
अज उमर वाली अउध मुकी है
ते इह सलामत मेरे कोल मुडिआ है,
पर कही अणहोणा—
कि पुन्न दी इच्छा नही, ना फल दी लालसा वाकी
इह चिट्टा दुध मेरे इश्क दा घोडा
मारण नही हुदा   मारण नही हुदा
वस इहीओ सलामत रहे, पूरा रहे!
मेरा अश्वमेध यज्ञ अधूरा है, ता अधूरा रहे।

अश्वमेध यज्ञ

एक चैत की पूनम थी
कि दुधिया श्वेत मेरे इश्क का घोडा
देश और विदेश मे चिचरने चला
सारा शरीर सच-सा श्वेत
और श्यामकर्ण विरही रग के।
एक स्वणपत्र उस के मस्तक पर
'यह दिग्विजय का घोडा—
कोई सबल है तो इसे पकडे और जीते'
और जैसे इस यज्ञ का एक नियम है
वह जहाँ भी ठहरा मैं ने गीत दान किये
और कई जगह हवन रचा
सो जो भी जीतने को आया वह हारा।
आज उमर की अवधि चुक गई है
यह सही-सलामत मेरे पास लौटा है,
पर कैसी अनहानी—
कि पुण्य की इच्छा नही, न फल की लालसा बाकी
यह दूधिया श्वेत मेरे इश्क का घोडा
मारा नही जाता—मारा नही जाता
बस यही सलामत रहे, पूरा रहे!
मेरा अश्वमेघ यज्ञ अधूरा है, अधूरा रहे!

टोस्ट

ग्ल शीशे दी सुराही विच
मैं प्याला दी शराब भरी सी
ख्याल वडे सूह सन
दोस्ता ने जाम पीते सन
ते उहना लफजा दे टोस्ट दित्ते सन
जो छाती दे विच नही उगदे।
उह किहडिया रुखा ते उगदे हन
ते हाठा दे गमनिआ विच गिर्ने जउदे हन
इह सोचण दी वेहल नही सी,
जा इज आखा कि सोचण तो सहम लगदा सी
इह लफजा दा जशन सी
भूलेखिआ दी वर्हे—गढ
मैं सा, रात सी, प्याला दी शराब सी, ते नडे दोस्त—
दोस्त जो कुझ बुलाइआ आये सन, कुछ बिन बुलाइआ।
सिर्फ इक कोई 'उह' सी
जो बडी वार सॅदण ते वी नही सी आया।

-

हुणे प्रभात होई है—
छाती नू चीर के, छाती दे विच सूरज दी किरण पई है
हुणे—मैं इक घणा जगल वेखिआ
ते गरजा दे रुख वेखे हन

टोस्ट

कल शीशे की सुराही मे
मैं ने खयालो की शराब भरी थी
खयाल बडे सुर्ख थे
दोस्तो ने जाम पिये थे
और उन लफ्जो के टोस्ट दिये थे
जो छाती मे नही उगते।
वे कौन-से पेडो पै उगते हैं
और होठो के गमलो मे किस तरह आते हैं,
यह सोचने का वक्त न था
या इस तरह कहूँ कि सोचने मे खौफ लगता था
यह लफ्जो का जश्न था
भुलावो की वर्षगाठ
मैं थी, रात थी, खयालो की शराब थी, और बहुत दोस्त
दोस्त जो कुछ बुलाने पर आये थे, कुछ बिनबुलाये।
सिर्फ एक कोई 'वह' था
जो बहुत बार बुलाने पर भी नही आया था

...

अभी सुबह हुई है—
छाती को चीर कर छाती मे सूरज की किरण पडी है
अभी मैं ने एक सपना बन देखा है
खुदगर्जियो के पेड देखे हैं

ते उहना ते आई अजीब पतझड वी वेखी है
पतझड—जो लफजा ते नही अउदी,
सिर्फ अर्था ते अउदी है
दोस्ता दे लफज अजे वी गुलाबी हन
बहार दे फुल्ला दी तरहा
सिर्फ अर्थ झडदे वेख रही हा
ते भरे जगल विच मैं असलो इकल्ली हा
मैं हा, चुप है, इक किरन है, ते शीशे दी खाली सुराही है

इह किही चुप है कि जिहदे विच पैरा दा खडाक शामिल है
कोई चुपचाप आया है—
चुप नालो टुटिआ चुप दा हिस्सा
किरन नालो टुटिआ किरन दा हिस्सा

इह इक कोई 'उह' है
जो वडी वार सदण ते वी नही सी आया।
ते हुण मैं इकल्ली नही, मैं आपणे आप नाल खडी हा
शीशे दी सुराही विच मैं नजरा दी शराब भरी है—
ते असी दोवे जाम पी रहे हा
उह टोस्ट दे रिहा है उहना लफजा दे
जो सिर्फ छाती दे विच उगदे हन।
इह अर्था दा जशन है—
मैं हा, उह है, ते शीशे दी सुराही विच नजरा दी शराब है

और पेडो पर आया अजीब पतझड भी देखा है
पतझड—जो लफ्जो पर नही आता,
सिर्फ अर्थो पर आता है
दोस्तो के लफ्ज अभी भी गुलाबी हैं
बहार के फूलो की तरह
सिर्फ अर्थ झरते देख रही हूँ
और भरे जगल मे मैं बिल्कुल अकेली हूँ
मैं हूँ, चुप है, एक किरण है, और शीशे की खाली सुराही है

यह कैसी चुप है कि जिस मे पैरो की आहट शामिल है
कोई चुपके-से आया है—
चुप से टूटा हुआ—चुप का टुकडा
किरण से टूटा हुआ किरण का टुकडा
यह एक कोई 'वह' है
जो बहुत बार बुलाने पर भी नही आया था।
और अब मैं अकेली नही, मैं आप अपने सग खडी हूँ
शीशे की सुराही मे नजरो की शराब भरी है—
और हम दोनो जाम पी रहे हैं
वह टोस्ट दे रहा है उन लफ्जो के
जो सिर्फ छाती मे उगते हैं।
यह अर्थों का जश्न है—
मैं हूँ, वह है, और शीशे की सुराही मे नजरो की शराब है

अक्खर

इक पत्थरा दा नगर सी—
सूरज वंश दे पत्थर
ते चंद्र वंश दे पत्थर
उस नगर विच रहदे सन

ते कहदे सन—
कि जुलमी राजिआ दा राज सी
ना राजिआ दे कन सन
ना प्रजा दी 'वाज' सी

ते ताहीउ—
उह लोक जद रोये सन
पत्थर दे होय सन

पत्थर दे देवता
पत्थर दे पुजारी
ते वसल अग न छोहदा
ते विरहा भग न हुदा

ते पत्थरा दे नगर विच
सूरज दा घोडा हिणकदा
पत्थरा ते पैर पटक्दा
वदला दे हाथी चिंघाडदे
पत्थरा नू परो उखाडदे

अक्षर

एक पत्थरो का नगर था—
सूर्यवश के पत्थर
चन्द्रवश के पत्थर
उस नगर मे रहते थे

और कहते हैं—
जुल्मी राजाओ का राज था
न राजाओ के कान थे
न प्रजा की आवाज थी

और तभी—
वे लोग जब रोये थे
पत्थर के हुए थे

पत्थर के देवता
पत्थर के पुजारी
और मिलन अग न छूता
और विरहा भग न होता

पत्थर के नगर मे
सूर्य का घोडा हिनकता
पत्थर पर पैर पटकता
बादलो के हाथी चिघाडते
पत्थरो को पैरो से उखाडते

राता दा हनेरा शूकदा
पत्थरा ते कुडली मारदा
ते उत्तों हाकमा दे हुक्म
दफा इक सौ चुताला

ते पत्थर महम के वहिंदे
जद दिला दी गुट्ठे
ता छाती दे हरख वाग
कोई पीला फुन पत्तर
जा सावे घाह दा तीला
इक पत्थर 'चो फुट्ट
जिऊ कप के इक रिखी दी
तपस्या टुटटे

जिन्द बुझदी ते जगदी सी
ते इज—पत्थरा दे नगर विच
पत्थरा दी वश वधदी सी

इक सी शिला
ते इक सी पत्थर
ते उन्हा दा उस नगर विच
सजोग लिखीआ सी—
ते उन्हा ने रल के
इक वरजत फल चखिया सी
म हाले वी वैठा
ता इक ख्याल अउदा है
कि मैं वी जे हुदी इक हरी पत्ती

उन्हा दे पिंडे दा हउका—
इक सावी करूवल
ता उन्हा दी छाती मन् नसीन हुदा,
सूरज दा घोडा हिणकदा
बदला दे हाथी चिघाडदे

रातो का अँधेरा फुफारता
पत्थरो पर कुण्डली मारता
और तब हाकिमो के हुक्म
दफा एक सौ चवालीस

और पत्थर सहम कर बैठने
जब दिलो के कोने मे
तो छाती के हर्ष-सा
कोई पीला पुष्प-पत्र
या हरित घास का तृण
एक पत्थर से फूटे
ज्यो काँप कर एक ऋषि की
तपस्या टूटे

जीवन बुझता और जलता था
और ऐसे—पत्थरो के नगर मे
पत्थरो का वश बढता था

एक थी शिला
एक था पत्थर
उन का उस नगर मे
सयोग लिखा था—
उन्होने मिल कर
एक वर्जित फल चखा था
मैं अब भी बैठूँ—
तो एक खयाल आता है
कि मैं भी जो होती एक हरी पत्ती

उन के तन का नि श्वास—
एक हरी कोपल
तो उन की छाती मुझे नसीब होती ।
सूरज का घोडा हिनकता
बादलो के हाथी चिंघाडते

ते राता दे सप
ते राजिआ दे हुक्म शूकदे
पर उन्हा दे ओहले
मैं निसल बैठ जाती
ते किसे—
ममता दी श्रेड विच लुकी रहदी
पर उह खौरे चकमाक पत्थर सन
जे मैले आसमान दे हेठा
ते मैली धरत दे उत्ते
इक पत्थरा दी सेज ते सुत्ते,
ते पत्थरा दी रगढ विचो
मैं अग्ग वाग जमी
—*अग्ग दी रुते*

पिंडे 'चो अग्ग जमी
ता पत्थर वी कविआ
ते शिला वी कवी
फेर पिंडे दी अग्ग
उन्हा झोली विच पाई,
ते धुए दी गुडती
अग्ग नू चटाई
हसे ता हसे
इक पौणा दी दाई
रोये ता रोये
जिहने कुख विचो जाई

"पत्थरा दी झोली
अग्ग न खेडे
पत्थरा दे दुख
हुदे पत्थरा जेडे,
पत्थरा दी जीभे
पत्थरा दे छाले

और रातो के सर्प
राजाओ के हुक्म फुकारते
पर उन को ओट मे
मैं सहज ही बैठ जाती
और किसी—
ममता की दरार मे छुपी रहती
पर शायद वे चकमक पत्थर थे
जो मैले आसमान के नीचे
मैली धरती के ऊपर
एक पत्थरो की सेज पर सोते।
और, पत्थरो की रगड मे से
मैं आग सरीखी जनमी
—आग की ऋतु मे

देह से आग जनमी
तो पत्थर भी काँपा
और शिला भी काँपी
फिर देह की आग
उन्होने आँचल मे डाली,
और धुएँ की घुट्टी
आग को चटाई
हँसी तो हँसी
एक पवनो की दाई
रोये तो रोये
जिस ने कोख से जाई

"पत्थरो की गोद मे
आग न खेले
पत्थरो के दुख
होते पत्थरो सरीखे,
पत्थरो की जीभ पर
पत्थरो के छाले

हम धरती के हवाले
तू पवन के हवाले !"
फिर शून्य का आलम
और उन्होंने कुछ न कहा
आ ऱ मूंदने से पहले
शायद यह भी न देखा
कि एक जनमती आग ने
एक लपट-सी सांस ली

आग के होंठो पर लिखी
लम्बी-सी सासें
और आग की हड्डियो मे होते
धुएँ ही धुएँ

ये वहती हवाएँ
मुझे जहाँ भी ले जाती
गर्म-गम राख
मेरे तन से झरती
और रोज मेरी उम्र का
जो भी दिन चढ़ता
मैं उसे अग लगाती
तो वही वह राख होता
मैं सोचती—
कि धुएँ की लकीर-सी
माथे की लकीर काँपती है ?
क्या माँ की कोख से
चिता की आग जनमती है ?

मै चिता की आग मे जलती
और चिता की आग-सी जलती
पर कभी—
नीद का अँधेरा इस तरह होता

असी धरती दे हवाले
तू पौणा दे हवाले"
फेर सुन्न दा आलम
ते उन्हा कुझ ना आखिआ
अखिआ मीटण तो पहला
शायद इह वी ना वेखिआ
कि इक जमदी अग्ग ने
इक लव दा हउका लिआ

अग्ग ते होठा ते लिखिआ
इक लवा जिहा हउका
ते अग्ग दे हडा च हुदा
इक धुआ ही धुआ

इह वगदिआ पौणा
मैनू जित्थे वी खडदिआ
तत्तीआ सुआहवा
मेरे पिडे तो झडदिआ—
ते रोज मेरी उम्र दा
जिहडा वी दिहु चढदा
मैं उस नू अग लादी
तो उहीओ राख हुदा
मैं सोचदी—
की धुए दी लीक वागु
मत्थे दी लीक कवदी है ?
की मावा दी कुख विचो
सिविआ दी अग्ग जमदी है ?

मैं सिविआ दी अग्ग विच जलदी
ते सिविआ दी अग्ग वाग बलदी
पर कदे—
नीदर दा हनेरा इस तरह हुदा

हम धरती के हवाले
तू पवन के हवाले ।"
फिर शून्य का आलम
और उन्होने कुछ न कहा
आँख मूंदने से पहले
शायद यह भी न देखा
कि एक जनमती आग ने
एक लपट-सी साँस ली

आग के होठो पर रिची
लम्बी-सी सासे
और आग की हड्डियो मे होते
धुएँ ही धुएँ

ये बहती हवाएँ
मुझे जहाँ भी ले जाती
गर्म-गर्म राख
मेरे तन से झरती
और रोज मेरी उम्र का
जो भी दिन चढ़ता
मैं उसे आग लगाती
तो वही वह राख होता
मैं सोचती—
कि धुएँ की लकीर-सी
माथे की लकीर काँपती है ?
क्या माँ की कोख से
चिता की आग जनमती है ?

मैं चिता की आग मे जलती
और चिता की आग सी जलती
पर कभी—
नीद का अँधेरा इस तरह होता

कि गुफाओं दी नीली
इक लाट जिहो निकलदी
ते जापदा—
कि सदिओं दी अग्ग,
अग्ग दा अपमान है
ते किसे सोहणी जां ससी
जां हीर विच्च जो अग्ग सी
मैंनू उस दी पहचाण है
ते इक सोच सी अउदी
कि सिफ मड़ीआं दी अग्ग
अग्ग नहीं हुंदी
इह अग्ग दी तौहीन है,
ते जापदा—
कि पत्थरां दे नगर विच
जो वारिस ने अग्ग बालो सी
इह मेरी अग्ग वी
उसे दी जानशीन है
अग्ग अग्ग दो वारिस

पर पत्थरां दी नगरी
कोई अग्ग ना पाले
छातीआं दे चुल्ले
कोई अग्ग न बाले
मत्थिआं दी भट्टी
कोई अग्ग ना सेके
ते मेरी जीभ ते उठे
उस अग्ग दे छाले

उह पत्थरां दे नगर वाले—
आहदे ते आहदे
इस अग्ग नूं बुझावो
पावो ते पावो

कि सपनो की नीली
लपट-सो निकलती
और लगता—
कि चिता की आग,
आग का अपमान है
और किसी सोहनी या ससी
या हीर मे जो आग थी
मुझे उस की पहचान है
और एक सोच-सी आती
कि सिफ मरघट की आग
आग नही होती
यह आग की तौहीन है।
और लगता—
कि पत्थरा के नगर मे
जो वारिस की आग थी
यह मेरी आग भी
उसी की जानशीन है
आग आग की वारिस

पर पत्थरो की नगरी
कोई आग न पाले
छातियो के चूल्हे
कोई आग न जलाये
माथो की भट्टी पर
कोई आग न सेंके
और मेरी जीभ पर उठे
उस आग के छाले

वह पत्थरो के नगर वाले
कहते और कहते—
इस आग को बुझाओ
डालो और डालो

किसे भोरे विच पावो
देवो ते देवो
नहु मधी विच देवो
जावो ते जावो
इहनू नदीए म्हावो

इक पत्थरा दा नगर सी
पत्थरा दे घड़े
ते मा—वाहरी अग्ग दा
क ।' म ना नड़े

फर उट्ठीओ हवा
जिहने झोली 'च खिडाइआ
ते जिहने मेरी मा दी
मा दी मा नू जाइया
कितो दौड के आई
ते हत्था दे विच
कुझ अक्खर लिआई
"इह निक्किआ कालिआ
लोका ना जाणी
इह लीका दे गुच्छे
तेरी अग्ग दे हाणी
वेख ! अक्खरा दा हुदा
अग्ग दा जेरा,
अग्ग दा जेरा
अग्ग तो वडेरा !
ते इक तरह कहिंदी
उह लध गई अग्गे
"तेरी अग्ग दी उमरा—
इन्हा अक्खरा नू लग्गे !"

किसी भौंरे मे छिपाओ
दो और दो
नाखून गले मे दो
जाओ और जाओ
इसे नदी मे बहाओ

एक पत्थरो का नगर था
पत्थरो के किनारे
और मातृहीन आग का
कोई सेक न बांटे

फिर वही हवा
जिस ने गोद मे खिलाया
और जिस ने मेरी माँ की
माँ की, माँ को जाया
कही से दौड कर आई
और हाथो मे कुछ अक्षर ले आई

'यह छोटी कालो
रेखा न जानना
ये रेखाओ के गुच्छे
तेरी आग के साथी
देख! अक्षरो का होता
आग का साहस
आग का साहस
आग से बढ कर'

और इस तरह कहती
वह गुजर गई आगे—
'तेरी आग की उमरिया—
इन अक्षरो को लागे!'

नागपचमी

देह मेरी पुराणा रूक्ख है
ते इश्क तेरा नागवशी—
उम्रा तो मेरे रूक्ख दी
इक खोड विच्च रहिदा है।

नागा दा वास ही रुक्खा दा सच है
नही ता एह टाहणिया ते व्र पत्ते—
देह दा खलजगन हुदा है

उज खलजगन वी प्यारा—
जे पीले दिहो झडदे ने
ता हरे सावे दिहो उगदे ने
ते छाती दा हनेरा जो वहुत गाढा है
—उत्थे वी कई वारी फुल्ल जगदे ने।
ते रूक्ख दी इक टाहण उत्ते—
जो वाला ने पीघ पाई है—
ओह वी ता देह दी रौणक

वेख इस मिट्टी दी वरकत—
मैं रूक्ख दी जूने जम्मे तो सवाई हा,
पर देह दे खलजगन विच्चो,
मैं घडी वेहल कड्दी है

नागपचमी

बदन मेरा पुराना पेड है
और इश्क तेरा नागवशी—
युगो से मेरे पेड की
एक खोह मे रहता है।

नागो का बसेरा ही पेडो का सच है
नही तो ये टहनियाँ और बौर-पत्ते—
देह का बिखराव होता है

यूँ तो बिखराव भी प्यारा
अगर पीले दिन झडते है
तो हरे दिन उगते है
और छाती का अँधेरा जो बहुत गाढा है
—वहाँ भी कई बार फूल जगते है।
और पेड की एक टहनी पर—
जो बच्चो ने पेंग डाली है
वह भी तो देह की रौनक

देख इस मिट्टी की बरकत—
मैं पेड की योनि मे आगे से दूनी हूँ
पर देह के बिखराव मे से
मैंने घडी भर वक्त निकाला है

ते दुद्ध दी कौली चुरा के
तेरी देह पूजण आयी हा

एह तेरे ते मेरे पिंडे दा पुन्न है
ते रक्खा नू लग्गी खोडा दी सौंह है,
ते—वरे पिच्छो
मेरी ज़िंदगी 'च आया—
एह नाग पचमी दा दिहो हैं

यारा ! तू खत ता लिखिआ सी
पर दुनिया दी मार्फत पाया
ते मित्तरा ! मुहब्बत दा खत
जो धरती दे मेच दा हुदा
जो अबर दे नाप दा हुदा
ओह दुनिया वालिआ ने फड के
इक कौम जिड्डा कतर के
कौम दे मेचे दा कीता सी

ते फेर शहरी गल्ल हुल्ली सी
ओह तेरा खत जो मेरे नाओ सी
लोक कहिंदे कि मजहब दे पिंडे
ओह डाढा ही मोकला औंदा
सो खत दी इबारत नू ओहना
कई थावा तो पाड लीता सी

ते अग्गो तू जाणदा कि कहे मत्थे
जिन्ना दी समझ दे मेचे
हर अक्खर ही मोकला औंदा
सो ओहना दे आपणे मत्थे
अक्खरा दे नाल पटके
ते हर अक्खर उधेड दित्ता सी .

और दूध की कटोरी चुरा कर
तुम्हारी देह पूजने आयी हूँ

यह तेरे और मेरे बदन का पुण्य है
और पेड़ो को लगी दिल की कसम है
और—बरस बाद
मेरी जिंदगी मे आया—
यह नागपचमी का दिन है

दोस्त ! तुमने खत तो लिखा था
पर दुनिया की मार्फत डाला
और यार ! मोहब्बत का खत
जो धरती के नाप का होता है
जो अम्बर के नाप का होता है
वह दुनिया वालो ने पकड कर
एक कौम जितना कतर कर
कौम के नाप का कर डाला

और फिर शहरो मे चर्चा हुई
वह तेरा खत जो मेरे नाम था
लोग कहते हैं कि मज़हब के बदन पर
वह बहुत ढीला लगता
सो खत की इबारत की तहें
कई जगह से फाड़ दिया गया...

ते मैंनू जो खत नही मिलिआ
पर जिस दी माफन आया
ओह दुनिया दुखी है—कि मैं
उस खत दे जवाव वरगी हा

और मुझे जो खत नहीं मिला
पर जिसकी मार्फत आया
वह दुनिया दुखी है—कि मैं
उस खत के जवाब जैसी हूँ

वारिस शाह नू !

अज आखा वारिस शाह नू किनो कबरा विच्चो बोल !
ते अज किताबे इश्क दा कोई अगला वरका फोल !

इक रोई सी धी पंजाब दी तू लिख-लिख मारे वैण,
अज लक्खा धीआ रोदीआ तैनू वारिस शाह नू कहण

उठ दरदमंदा दिआ दरदीआ उठ तक अपणा पंजाब
अज बेले लाशा विछीआ ते लहू दी भरी चनाब

किसे ने पंजा पाणीआ विच दित्ती जहिर रला
ते उन्हा पाणीआ धरत नू दित्ता पाणी ला

इस जरखेज जमीन दे लू लू फुट्टिआ जहर
गिठ गिठ चढीआ लालीआ ते फुट-फुट चड़िआ कहर

विहु वलिसी वा फिर वण-वण वग्गी जा
हर इक वास दी वंझली दित्ती नाग वणा

नागा कीले लोक मूंह बस फिर डंग ही डंग
पलो पली पंजाब दे नीले पै गए अंग

गलिओ टुटटे गीत फिर तकलिओ टुट्टी तन्द
त्रिंजणो टुटीआ सहेलीआ चरखड़े घूकर बंद

सणे सेज दे बेड़ीआ लुडडण दित्तीआ रोहड़
सणे डालीआ पीघ अज पिपला दित्ती तोड़

वारिस शाह से।

आज वारिस शाह से कहती हूँ—अपनी कब्र में से बोलो।
और इश्क की किताब का कोई नया वर्क खोलो।

पंजाब की एक बेटी रोई थी, तू ने उस की लम्बी दास्तान लिखी,
आज लाखों बेटियाँ रो रही हैं वारिस शाह! तुम से कह रही हैं

ऐ दर्दमंदों के दोस्त, पंजाब की हालत देखो
चौपाल लाशों से अटा पड़ा है, चनाब लहू से भर गया है

किसी ने पाँचों दरियाओं में ज़हर मिला दिया है
और यही पानी धरती को सींचने लगा है

इस ज़रखेज़ धरती से ज़हर फूट निकला है
देखो, सुर्खी कहाँ तक आ पहुँची! और कहर कहाँ तक आ पहुँचा!

फिर ज़हरीली हवा वन-जंगलों में चलने लगी
उस में हर बाँस की बाँसुरी जैसे एक नाग बना दी

इन नागों ने लोगों के होंठ डस लिये, फिर ये डंक बढ़ते चले गये
और देखते-देखते पंजाब के सारे अंग नीले पड़ गये

हर गले से गीत टूट गया, हर चरखे का धागा टूट गया
सहेलियाँ एक-दूसरे से बिछुड़ गईं, चरखों की महफिल वीरान हो गई

मल्लाहों ने सारी किश्तियाँ सेज के साथ ही बहा दीं
पीपलों ने सारी पेंगें टहनियों के साथ तोड़ दीं

जित्थे वजदी फूक प्यार दी वे ओह् वञ्जली गई गुआच
राझे दे सभ वीर अज भुल गए उसदी जाच

धरती ते लहू वस्सिआ कबरां पईआं चोण
प्रीत दीआं शाह्ज़ादीआं अज विच मज़ारां रोण

अज सब्भे 'कैदो' बण गए हुस्न इश्क दे चोर
अज कित्थों लिआईए लभ्भ के वारिस शाह इक होर

अज आखां वारिस शाह नूं कितों कबरां विच्चों बोल !
ते अज किताबे इश्क दा कोई अगला वरका फोल !

जहा प्यार के नग़मे गूंजते थे, वह बाँसुरी जाने कहाँ खो गई
और रांझे के सब भाई बाँसुरी बजाना भूल गये

धरती पर लहू बरसा, कब्रों से खून टपकने लगा
और प्रीत की शहज़ादियाँ मज़ारों में रोने लगीं

आज जैसे सभी 'कैदो' बन गये हुस्न और इश्क के चोर
मैं कहाँ से ढूढ लाऊँ एक वारिस शाह और

वारिस शाह ! मैं तुम से कहती हूँ अपनी कब्र से उठो
और इश्क की किताब का कोई नया वर्क खोलो !

मजबूर
[१६४७]

मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी
मैं भी ता इक इनसान हा
अजादीआ दी टक्कर विच्च इक सट्ट दा निशन हा
उस हादसे दा चिह्न हा
जो मा मेरी दे मत्थे उत्ते लगणा जरूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

धिरकार हा मैं उह जिहडी इनसान उत्ते प रही
पैदाइश हा उस वक्त दी जद टुट रहे सी तारे
जद बुझ गया सी सूरज ते चन वी बेनूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबर सी

मैं खरीड हा इक जखम दा, मैं धब्बा हा मा दे जिसम दा
मैं जुनम दा उह बाज हा जो मा मेरी ढोदी रही
मा मेरी नू पेट 'चा सडिआद इक औदी रही

कोण जाण सकदा है कितना कु मुशकिल है
आखरा दे जुलम नू इक पेट दे विच पालणा
अगा नू झुलसणा ते हड्डा नू बालणा
फल हा उस वकत दा मैं—
आजादी दीआ वेरीआ नू पै रिहा
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

मजबूर
[१९४७]

मेरी माँ की कोख मजबूर थी
मैं भी तो एक इनसान हूँ
आजादियो की टक्कर मे उस चोट का निशान हूँ
उस हादसे की लकीर हूँ
जो मेरी माँ के माथे पर लगनी जरूर थी
मेरी मा की कोख मजबूर थी

मैं वह लानत हूँ जो इनसान पर पड रही है
मैं उस वक्त की पैदाइश हूँ जब तारे टूट रहे थे
जब सूरज बुझ गया था, जब चाद की आँख बेनूर थी
मेरी माँ की कोख मजबूर थी

मैं एक जख्म का निशान हूँ, मैं माँ के जिस्म का दाग हूँ
मैं जुल्म का वह बोझ हूँ जो मेरी माँ उठाती रही
मेरी माँ को अपने पेट से एक दुर्गन्ध-सी आती रही

कौन जाने कितना मुश्किल है पेट में एक जुल्म को पालना
अंग-अंग को झुलसाना और हड्डियों को जलाना
मैं उस वक्त का फल हूँ—
जब आजादी के पेड पर बौर पड रहा था
आजादी बहुत पास थी, बहुत दूर थी
मेरी माँ की कोख मजबूर थी

अमृता प्रीतम

दोस्तो

[१७ सितम्बर १९६८]

रात दा उलाभा कि दिहु जाण लग्गा सी
मेरी दहलीज टप्प के, मुठ तारे चुरा के लै गया

दिहु दा शिक्वा कि रात जाण लग्गी सी
मेरी दहलीज टप्प के मुठ किरना चुरा के लै गई

होठ चादी दे कौल सन मिसरी दा टोटा घोल के—
फेर रात मुसकराई ते दिहु गुडकिआ
तारा कोई घटिआ नही किरना दा कुछ नही विगडिया

भेडा दी चोरी चरवाहिआ दी चोरी
बदूका दी चोरी सिपाहीआ दी चोरी

इह कहीआ चोरीआ ने दोस्तो ! इलजाम ने केहो जहे !
ते राजनीती दे हत्थ विच्च इह जाम ने केहो जहे !

जो वेहडा सजाए जग्ग दा उस हुसन दो चोरी करो !
जो काइदा सिखाए अदब दा उस इश्क दी चोरी करो !
जो रसम चलाए जीऊण दी उस इलम दी चोरी करो !
जो किसमत लिखे इनसान दी उस क्लम दी चोरी करो !

दिल दी दहलीज टप्प के वाहवा दा बूहा खोहल के
इह दौलत चुराओ ! होठ चादी दे कौल ने
मिसरी दा टोटा घोल के कोई ऊज लाओ

दोस्तो !

[१७ सितम्बर, १९६५]

रात का शिक्वा कि दिन जाने को था
मेरी दहलीज पार कर मुट्ठी-भर सितारे चुरा कर ले गया

दिन का शिकवा कि रात जाने को थी
मेरी दहलीज पार कर के मुट्ठी-भर किरणें चुरा कर ले गई

होठ चाँदी के क्टोरे थे मिसरी का एक टुकडा घोल कर—
फिर रात मुसकराई और दिन हँस दिया
सितारा कोई कम नही, किरणें पूरी-की-पूरी थी

भेडो की चोरी, चरवाहो को चोरी
बन्दूको की चोरी, सिपाहियो की चोरी

यह कैसी चोरियाँ ह दोस्तो, ये इल्जाम कैसे हैं !
और राजनीति के हाथ मे ये जाम कैसे है !

जो दुनिया का आँगन सजाये उस हुस्न की चोरी करो !
जो अदव के कायदे सिखाये उस इश्क की चोरी करो !
जो जीने की रस्म चलाये उस इल्म की चोरी करो !
जो इसान की किस्मत लिखे उस कलम की चोरी करो !

दिल की दहलीज़ पार कर बाहो के किवाड खोल कर
यह दोलत चुराओ ! होठ चादी के क्टोरे हैं
मिसरी का टुकडा घोल कर कोई तोहमत लगाओ !

इह दौलता ने सारीआ—
जे चोरी करो ता चोरीआ मुबारक,
जे ऊजा लगाओ ता ऊजा वी प्यारीआ

ये सभी दौलतें हैं—
अगर चोरी करो तो सब चोरियाँ मुबारक !
अगर तोहमत लगाओ तो सब तोहमतें प्यारी हैं।

इक खत

चन्न सूरज दो दवाता कलम ने डोबा लिआ
लिखतम तमाम धरती पढतम तमाम लोक

साइमदानो दोस्तो !
गोलीआ, बदूका ते ऐटम बनाण तो पहिला
इह खत पढ लवो !

हुकमरानो दोस्तो !
गोलीआ, बदूका ते ऐटम चलाण तो पहिला
इह खत पढ लवो !

सितारिआ दे हरफ ते किरना दी बोली जे पढनी नही अऊदी
किसे आशक-अदीब तो पढवा लवो
अपनो किसे महबूब तो पढवा लवो
ते हर इक मा दी इह मात बोली है
घडी कु बैठ जावो किसे वी था 'ते
ते खत पढवा लवो किसे वी मा तो

ते फेर आवो मिलो कि मुलका दी हद्द जित्थे है
इक हद्द मुलक दी
ते मेच के वेखो
इक हद्द इलम दी
इक हद्द इशक दी
ते फेर दस्सो कि किस दी हद्द कित्थे है !

एक ख़त

चाँद सूरज दो दवातें
कलम ने डोबा लिया
लिखतम् तमाम धरती पढ़तम् तमाम लोग

साइंसदानो, दोस्तो !
गोलियाँ, बन्दूकें और एटम बनाने से पहले
इस ख़त को पढ़ लेना

हुक्मरानो' दोस्तो !
गोलियाँ, बन्दूकें और एटम चलाने से पहले
इस ख़त को पढ़ लेना !

सितारों के हरफ़ और किरनों की बोली, अगर पढ़नी नहीं आती
किसी आशिक़-अदीब से पढ़वा लेना
अपने किसी महबूब से पढ़वा लेना
और हर एक माँ की यह 'मातृ-बोली' है
तुम बैठ जाना किसी भी ठाँव
और ख़त पढ़वा लेना किसी भी माँ से

फिर आना और मिलना कि मुल्क की हद जहाँ है
एक हद मुल्क की
और नाप कर देखो
एक हद इल्म की
एक हद इश्क़ की
और फिर बताना कि किस की हद कहाँ है

चन्न सूरज दो दवाता,
अज इक डोवा लवो
ते एस खत दी पहुच देवो
ते दुनीआ दी सुख साद दे दो अक्खर वी पा दिओ

—तुहाडी—आपनी—धरती
तुहाडा खत उडीकदी वडा फिकर करदी पई

चाँद सूरज दो दवातें
हाथ में एक कलम लो
इस खत का जवाब दो
और दुनिया की खैर-खैरियत के दो हरफ भी डाल दो

—तुम्हारी—अपनी धरती
तुम्हारे खत की राह देखती बहुत फिकर कर रही

इक नगर
[इक दिन]

मीह् कदो दा थम चुक्का ए

सारा नगर घडी कु पहिला चिक्कड़ दे विच डिग पिआ सी
तलीआ परने ममा उठिठआ किसे कडी ते वाह्वा रखदा
किसे इट्ट ते पैर टिकादा गोई वास वक्खी विच्च धरदा
मसा लक्क नू सिद्धा करदा खडे होण नू जूझ रिहा ए
मीह् कदो दा थम चुक्का ए—

इह मत्थे तो, पुडपुडीआ तो अजे वी मुडका पूझ रिहा ए
ऐस नगर वी सुपने ओदे—
किन्नीआ वी मोचा नू भीटो फिर वी अदर आ जादे ने
किधरे सगमरमरी वादी दम्स ओस दी पा जादे ने

सारा नगर उन्हा दे आखे नीदर दे विच तुर पदा ए
दूर भविख दा काह्ली काह्ली कुछ रमता तैह कर लदा ए

फिर रसते विच सूरज दा इक अड्डी खोडा इसनू लग्गे
टुट जाए गोडे दी चप्पणी अरका दे विच्चो लहू वग्गे

वरतमान दी वद गली
ते दुक्ख भुक्ख दी कद्ध साह्मणे

रात वराते जिम्ही परी जिहडे वी रसते ते जादा
सुवह सवेरे ओही पैरी उसे रसनिओ मुडके औदा

एक नगर
[एक दिन]

मेह कब का थम चुका है

सारा नगर पल-भर पहले कीचड मे गिर गया था
हथेलियो के बल मुश्किल से उठा किसी शहतीर पर बाजू रखता
किसी ईंट पर पाव टिकाता कोई सास बगल मे लेता
मुश्किल से कमर सीधी करता खडा होने को जूझ रहा है
मेह कब का थम चुका है—

यह माथे और कनपटियो से अभी तक पसीना पोछ रहा है
इस नगर मे भी सपने आते हैं—
सोच के किवाड कितने ही भेड लो, ये फिर भी अन्दर आ जाते हैं
कही कोई सगमरमर की वादी है ये उसका पता दे जाते हैं

सारा नगर उन का कहा मान कर नीद मे चल देता है
जल्दी-जल्दी दूर भविष्य का कुछ रास्ता तय कर लेता है

फिर रास्ते मे सूरज की इक ठोकर इसे लगती है
घुटने पर चोट आती है, कुहनियो से खून टपकता है

वतमान की बन्द गली
सामने दु ख और भूख की दीवार

रात के समय जिन पैरो जिस रास्ते पर भी जाता है
सुबह के वक्त उन्ही पैरो उसी रास्ते लौट आता है।

(ते फेर इक दिन)

रात कदों दी लग्घ चुकी ए
सारा नगर चौंकड़ी मारी इक फलसफी वांगू बैठा

ना कोई गल्ल सुणे ना आखे
ना कोई इसदे मत्थे उत्ते लीक हरख दी, लीक शोक दी

जां तां इसने वरतमान दी बंद गली दा भेत बुझिआ
इक फलसफी वांगू बैठा
के जां अज दे मींह विच ठठ्ठा

मींह कदां दा थम चुक्का ए—

यूं हमेशा यहां से चलता है और हमेशा यही रहता है

(और फिर एक दिन)

रात कभी की गुजर चुकी है
सारा नगर आलती-पालती मारे इक फलसफी की तरह बैठा हुआ है

न कोई बात सुनता है, न कहता है
न इस के माथे पर कोई हर्ष की रेखा है, न ही कोई शोक की रेखा

या तो इस ने वर्तमान की बन्द गली का भेद पा लिया है
और इक फलसफी की तरह बैठा हुआ है
या फिर आज मेंह में गिर गया है

मेंह कब का थम चुका है

इक शहर

१

जेहडो फसल तारिआ वीजी किसने चोर गुदामी पाई
बद्दल दी वोरी नू झाडा रात दी मडी उड्डन घटटे

चन्दरमा इक भुक्खा वच्छा सुक्के थण नू मूह मारदा
धरती मा किल्ले 'ते वज्झी अवर दी खुरली नू चट्टे

२

हसपताल दे बूहे अग्गे हक्क, सच, ईमान ते कदरा
किन्ने लफज़ बीमार पए ने, भीड जही इक लग्ग गई ए

खवरे कोई लिखेगा नुसखा खवरे नुसखा लग्ग जावेगा
पर हाली ता इज जापदा अउध इन्हा दी पुग्ग गई ए

३

एस शहर दे विच्च इक्क थावे, था कि जित्थे रहण नियावें
जिस दिन कोई ना मिले मजूरी उस दिन जिद उन्हा दी झूरी

पहली रात वुढेपे वाली कन्ना दे विच आ के कह गई
कि एस शहर दे विच उन्हा दी अह्लल जवानी चोरी हो गई

४

कल रात कहर दा पाला अज तडके सेवा समती नू
सडक दे उत्तो लाश मिली है, नाओ थाओं कुछ पता ना लग्गे

एक शहर

१

वह फसल जो सितारो ने बोई थी, किसने इसे चोर गोदाम मे डाल लिया
बादल की बोरी को झाड कर देखा, रात की मडी मे गद उड रही है

चाँद एक भूखे बछडे की तरह सूखे थनो को चिचोड रहा है
धरती-माँ अपने थान पर बँधी आकाश की चरनो को चाट रही है

२

अस्पताल के दरवाजे पर हक, सच, ईमान और कद्र
जाने कितने ही लफ्ज़ बीमार पडे है, एक भीड-सी इकट्ठी हो गई है

जाने कोई नुस्खा लिखेगा, जाने वह नुस्खा लग जायेगा
लेकिन अभी तो ऐसा लगता है, इनके दिन पूरे हो गए हैं

३

इस शहर मे एक घर, घर कि जहाँ बेघर रहते हैं
जिस दिन कोई मजदूरी नही मिलती उस दिन वे पशेमान होते हैं

बुढापे की पहली रात उन के कानो मे धीरे से कह गई
कि इस शहर मे उन की भरी जवानी चोरी हो गई

४

कल रात बला की सर्दी थी, आज सुबह सेवा-समिति को
एक लाश सडक पर पडी मिली है, नाम व पता कुछ भी मालूम नही

श्मशान मे आग जल रही है, इस लाश पर रोने वाला कोई नही
या तो कोई भिखारी मरा होगा या शायद कोई फलसफा मर
गया है

५

किसी मर्द के आगोश मे—
कोई लडकी चीख उठी जैसे उसके वदन से कुछ टूट गिरा हो

थाने मे एक कहकहा बुलन्द हुआ, कहवाघर मे एक हँसी बिखर गई

सडको पर कुछ हॉकर फिर रहे हैं
एक-एक पैसे मे खबर बेच रहे हैं, बचा-खुचा जिस्म फिर से नोच रहे हैं

६

गुलमोहर के पेडो तले, लोग एक-दूसरे से मिलते हैं
जोर से हँसते है गाते हैं, एक-दूसरे से अपनी-अपनी
मौत की खबर छुपाना चाहते है,
सगमरमर कब्र का तावीज है, हाथो पर उठाये-उठाये फिरते हैं
और अपनी लाश की हिफाजत कर रहे हैं

७

मशीनें खड-खड कर रही है, शहर जैसे एक छापाखाना है
इस शहर मे एक-एक इन्सान एक-एक अक्षर की तरह अकेला है

हर पैगम्बर एक कम्पोजीटर अक्षर जोड-जोड कर देखता है
अक्षरो मे अक्षर बुनता है, कभी कोई फिकरा नही बन पाता

८

दिल्ली इस शहर का नाम है
कोई भी नाम हो सकता है (नाम मे क्या रखा है)
भविष्य का सपना रोज रात को

वर्तमान की मैली चादर
आधी ऊपर ओढता है, आधी नीचे विछाता है,
कितनी देर कुछ सोचता है, जागता है, फिर नीद की गोली खा लेता है

मढीआ दे विच अग्ग पई बलदी, कोई ना एस लाश नू रोईआ
जा कोई मोइआ है इक मगता जा कोई शाइद फलसफा मोइआ

५

किसे मरद दी बुक्कल दे विच—
किसे कुडी ने चीक मार के पिड्डे तो इक पत्थर लाही

थाणे दे विच हासा मचिआ काहवाघर विच ही-ही होई

सडका ते कुछ हाकर फिरदे
इक-इक पैसे खबर वेचदे, रहिंदा पिड्डा फेर नोचदे

६

गुलमोहर दे रखा हेठा लोकी इक दूजे नू मिलदे
वडो जोर दी हसदे, गऊदे इक दूजे तो अपनी अपनी—
मौत दी खबर छुपाना चाहुदे
चिट्टा जिहा कबर दा पत्थर हत्था दे विच्च चुक्की फिरदे
अते लाश दी राखी करदे

७

खडखड खडखड करन मशीना शहर जिवे इक छापाखाना
हर इक बन्दा एस शहर दा इक इक कल्ले अक्खर वागू

हर पैगम्बर—कम्पोजीटर अक्खर मेल मेल के वेखे
अक्खरा दे विच अक्खर उणदा कदे कोई फिकरा ना वणदा

८

दिल्ली एस शहर दा नाओ
कोई नाओ वी हो सकदा ए (नावा दे विच्च की पिआ ऐ !)
रोज़ भविख दा सुपना राती

वरतमान दी मैली चादर
अद्धी अपने ऊपर ताणे अद्धी अपने हेठ विछावे
किन्ना चिर कुझ सोचे, जागे फिर नींदर दी गोली खावे

श्मशान मे आग जल रही है, इस लाश पर रोने वाला कोई नही
या तो कोई भिखारी मरा होगा या शायद कोई फलसफा मर
गया है

५

किसी मद के आगोश मे—
कोई लड़की चीख उठी जैसे उसके वदन से कुछ टूट गिरा हो

थाने मे एक कहकहा वुलन्द हुआ, कहवाघर मे एक हँसी विखर गई

सडको पर कुछ हॉकर फिर रहे हैं
एक-एक पैसे मे खवर बेच रहे है, वचा-खुचा जिस्म फिर से नोच रहे हैं

६

गुलमोहर के पेडो तले, लोग एक-दूसरे से मिलते हैं
ज़ोर से हँसते हैं गाते हैं, एक-दूसरे से अपनी-अपनी
मौत की खवर छुपाना चाहते हैं,
सगमरमर कब्र का तावीज है, हाथो पर उठाये-उठाये फिरते हैं
और अपनी लाश की हिफाजत कर रहे हैं

७

मशीनें खड-खड कर रही है, शहर जैसे एक छापाखाना है
इस शहर मे एक-एक इन्सान एक-एक अक्षर की तरह अकेला है

हर पैगम्बर एक कम्पोज़ीटर अक्षर जोड-जोड कर देखता है
अक्षरो मे अक्षर बुनता है, कभी कोई फिकरा नही वन पाता

८

दिल्ली इस शहर का नाम है
कोई भी नाम हो सकता है (नाम मे क्या रखा है)
भविष्य का सपना रोज़ रात को

वर्तमान की मैली चादर
आधी ऊपर ओढता है, आधी नीचे विछाता है,
कितनी देर कुछ सोचता है, जागता है, फिर नीद की गोली खा लेता है

काजान जाकिस

मैं जिन्दगी नू इश्क कीता सी
पर जिन्दगी इक वेश्वा की तरहा
मेरे इश्क 'ते हसदी रही
ते मैं उदास इक नामुराद आशक
सोचा दे विच घुलदा रिहा
पर जदों इस वेश्वा दा हासा
मैं कागज़ 'ते उतारिआ
ता हर अखर दे विच्चों इक चीख निकली
ते खुदा दा आसन किन्ना ही चिर हिलदा रिहा

काज़ान ज़ाकिस

मैं ने जिन्दगी से इश्क किया था
पर जिन्दगी एक वेश्या की तरह
मेरे इश्क पर हँसती रही
और मैं उदास एक नामुराद आशिक
सोचों मे घुलता रहा
पर जब इस वेश्या की हँसी
मैं ने कागज पर उतारी
तो हर अक्षर के गले से एक चीख निकली
और खुदा का तख्त कितनी ही देर हिलता रहा

मैं

वहुत समकाली हन—
सिर्फ इक 'मैं' मेरा समकाली नही
'मैं' विना मेरा जन्म
पुन्न दी थाली दे विच अपराध दा इक सगण है।
मास दे विच कैद होईआ मास दा इक छिण है।
ते मास दी इस जीभ उत्ते—
जदो वी कोई लफ्ज़ अउदा, खुदकशी करदा,
जे खुदकशी तो वचदा—
कागज़ 'ते उतरदा, ता कत्ल हुदा है।
वन्दूक दी गोली—
जे इक वार मैंनू हनोई विच लगदी है,
ता दूसरी वारी प्राग विच लगदी
ते इक धुआ हवा दे विच तरदा है,
ते मेरा 'मैं' अठमाहे वच्चे दी तरहा मरदा है।
की किसे दिन, इह मेरा 'मैं' मेरा समकाली वणेगा ?

मैं

बहुत समकालीन है—
सिर्फ एक 'मैं' मेरा समकालीन नहीं।
'मैं' बिना मेरा जन्म—
पुण्य की थाली में पड़ा अपराध का एक शगुन है।
मास में बन्दी हुआ मास का एक क्षण है।
और मास की हर जीभ पर—
जब भी कोई लफ्ज़ आता, खुदकशी करता,
जो खुदकशी से बचता—
कागज़ पर उतरता, तो कतल होता है।
बन्दूक की गोली—
जो एक बार मुझे हनोई में लगती है
तो दूसरी बार प्राग में लगती है।
और एक धुआँ हवा में तैरता है,
और मेरा 'मैं' अठवासे बच्चे की तरह मरता है।'
क्या किसी दिन यह मेरा 'मैं' मेरा समकालीन बनेगा ?

स्टिल लाइफ

इह जलिआ वाला—
ते उस दी कध विच, चुपचाप बैठे गोलीआ दे छेक।
इह् साइबेरिया—
ते उसदी जमीन 'ते चौका दे टुकड़े बर्फ विच जम्मे।
कान्सन्ट्रेशन कैम्प—
मनुक्खी मास दी हवाड़ भट्ठीआ दी राख विच सुत्ती।
इह करागुयेवाच—
जिहदी कुल वस्सो, इक पत्थर दे बुत विच सिमटी।
इह हीरोशिमा है—
जो इक गुटठे इक पाटे होये दस्तावेज वाग डिग्गा।
ते इह् प्राग—
जो साह घुट्ट के अज सेंसर दी पीडी मुठठ विच बैठा।
हर चीज चुप ते अडोल है
सिफ मेरी छाती दे विचो इक उब्भा साह निकलदा
ते धरती दा हर टुकडा हिल्ल जिहा जादा

स्टिल लाइफ

यह जलियाँवाला—
और उस की दीवार मे चुपके से बैठे गोलियो के छेद
यह साइवेरिया—
और उस की जमीन पर चीखो के टुकडे वर्फ मे जमे
कन्सन्ट्रेशन कैम्प—
इनसानी मास की गन्ध भट्टियो की राख मे सोई
यह करागुयेवाच—
जिस की कुल आवादी एक पत्थर के वुत मे सिमटी
यह हिरोशिमा है—
जो एक कोने मे एक फटे हुए दस्तावेज की तरह पडा है
और यह प्राग—
जो सास रोके आज सैसर की मुट्ठी मे बैठा है।
हर चीज चुप और अडोल है
सिफ मेरी छाती मे से एक गहरी सास निकालती है
और धरती का हर टुकडा हिल-सा जाता है।

शहर

मिरा शहर इक लम्बी बहिस वरगा है
सडका—बेतुकीआ दलीआ दी तरह
ते गलीआ इस तरह—
जिउ इको गल्ल नू कोई इधर घसीटदा कोई उधर

हर मकान इक मुठ वागु वटीआ होईआ
कधा कची चीआ वागु
ते नालीआ, जिउ मूहा 'चो झग वगदी है

एह बहिस घौरे सूरज तो शुरू होई सी
जु उस नू वेख के होर गरम हुदी
ते हर वहे दे मुह 'चो—
फिर साइकला 'ते सकूटरा दे पहिए
गाहला दी तरह निकलदे
ते घटीआ ते हार्न इक दूजे 'ते झपटदे

जिहडा वी बाल इस शहर विच जमदा
पुछदा कि किहडी गल्ल तो एह बहिस हो रही
फिर उसदा सवाल ही इक बहिस बणदा
बहिस विचो निकलदा बहिस विच रलदा

शहर

मेरा शहर एक लम्बी बहस की तरह
सड़कें—बेतुकी दलीलों-सी
और गलियाँ इस तरह—
जैसे एक बात को कोई इधर घसीटे कोई उधर

हर मकान एक मुट्ठी-सा भिचा हुआ
दीवारें—किचकिचाती-सी
और नालियाँ, ज्यों मुँह से झाग बहती है

यह बहस जाने सूरज से शुरू हुई थी
जो उसे देख कर यह और गरमाती
और हर द्वार के मुँह से
फिर साइकिलों और स्कूटरों के पहिए
गालियों की तरह निकलते
और घण्टियाँ हॉर्न एक-दूसरे पर झपटते

जो भी बच्चा इस शहर में जनमता
पूछता कि किस बात पर यह बहस हो रही है
फिर उस का प्रश्न भी एक बहस बनता
बहस से निकलता बहस में मिलता

सखा घडिआला दे साह् मुक्के
रात अउदी, सिर घपादी ते चली जादी
पर नीदर दे विच वी इह वहि्स न मुक्के
मिरा शहर इक लम्बी वहि्स वरगा

शख घण्टो के श्वास सूखे
रात आती, सिर पटकती और चली जाती
पर नींद मे भी बहस खत्म न होती
मेरा शहर एक लम्बी बहस की तरह

वैराग्य

चिरा तों एक गल्ल चली अउदा सी—
कि वेले दी ताक्त वड्ढी तारदी
इतिहास तों चोरी इतिहास दे वरके खरीददी,
जदों वी चाहदी रही
कुझ सतरा वदलदी ते कुझ वुझादी रही,
इतिहास हसदा रिहा खिझदा रिहा,
ते हर इतिहासकार नू उह माफ करदा रिहा,
पर अज शायद उह वहुत ही उदास है—
इक हथ उस दी जिरद चुक के—
कुझ वरकिआ नू पाडदा
ते उन्हा दी थावें होर वरके सी रिहा
अते इतिहास—चुपचाप वरकिआ 'चो निकलके
इक रुख दे थल्ले खलोता सिगरट पी रिहा।

वैराग्य

मुद्दत से एक बात चली आती थी
कि वक्त की ताकत रिश्वतें देती
इतिहास से चोरी इतिहास के पन्नो को खरीदती
वह जब भी चाहती रही
कुछ पक्तियाँ वदलती और कुछ मिटाती रही,
इतिहास हँसता रहा खीझता रहा,
और हर इतिहासकार को वह माफ करता रहा।
पर आज शायद बहुत ही उदास है—
एक हाथ उस की जिल्द को उठा कर
कुछ पन्नो को फाडता
और उन की जगह कुछ और पन्ने सी रहा है
और इतिहास—चुपके से उन पन्नो से निकल कर
एक पेड के नीचे खडा एक सिगरेट पी रहा है

राजनीति

सुणिआ है कि राजनीति इक कलासिक है।
हीरो वहुमुखी प्रतिभा दा मालिक—रोज अपणा नाम वदलदा
हीरोइन हकूमत दी कुरसी—उही रहदी है
एक्सट्रा राजसभा ते लोकसभा दे मैंबर
फाइनासर दिहाडीदार मजदूर, कामे, ते किसान
(फाइनास करदे नही, करवाये जादे हन)
ससद इनडोर शूटिंग दा स्थान
अखवारा आउटडोर शूटिंग दा साधन
इह फिल्म मैं वेखी नही, सिफ सुणी है
क्योंकि सैंसर दा कहिणा है—'नाट फार अडल्ट्स।'

राजनीति

सुना है राजनीति एक क्लासिक फिल्म है
हीरो बहुमुखी प्रतिभा का मालिक रोज अपना नाम बदलता
हीरोइन हकूमत की कुर्सी वही रहती है
ऐक्स्ट्रा राजसभा और लोकसभा के मैम्बर
फाइनेंसर दिहाडी के मजदूर, कामगर और खेतिहर
(फाइनास करते नही, करवाये जाते हैं)
ससद इनडोर शूटिंग का स्थान
अखबार आउटडोर शूटिंग के साधन
यह फिल्म मैं ने देखी नही सिर्फ सुनी है
क्योंकि सैन्सर का कहना है—'नॉट फॉर अडल्ट्स।'

जिन्दगी

छे कदम पूरे ते इक अद्धा जेल दी इक कोठडी
कि वन्दा बैठ उठ सके ते निसल वी हो लवे।

'रब्ब' दी इक वही रोटी, 'सब्र' दा वक्त्ल सलूणा
चाहवें ता रज पुजके उह दोवें डंग खा लवे।

ते जेल दे हाते दी गुट्ठे इक छप्पड 'ज्ञान' दा
कि वन्दा हत्थ मुह धोवे—
(ते कुझ मच्छर नतार के) उह बुक भरके पी लवे

रूह दा इक जखम वडा आम रोग है

जखम दे नगेज तो जे वहुत शम आवे
ता सुपने दा टोटा पाडके उह ज़खम उत्ते दे लवे।

इस जेल दी इह गात—
कोई कदे ना करदा ते कोई कदे ना कहिंदा—
कि दुनिया दी हर वगावत—
इक ताप वाग चढदी ताप चढदे ते उतर जादे।

पर जे कदे इन्सान नू आस दा कसर ना हुदा

जिन्दगी

छह कदम पूरे और एक आधा जेल की एक कोठरा
कि इसान बैठ-उठ सके और आराम से सो भी सके।

'ईश्वर' एक बासी रोटी, 'सब्र' अधपका सालन
चाहे तो जी भर कर यह दोनो जून खा ले।

और जेल के अहाते मे एक जोहड 'ज्ञान' का
कि इन्सान हाथ-मुंह धो ले—
(और कुछ मच्छर छान कर) वह अजुली भर पी ले।

रूह का एक जख्म एक आम रोग है।

ज़ख्म की नग्नता से जो बहुत शर्म आये
तो सपने का टुकडा फाड कर उस ज़ख्म को ढाँप ले।

इस जेल की यह बात—
कोई कभी न करता और कोई कभी न कहता
कि दुनिया की हर बगावत—
एक ज्वर की तरह चढती, ज्वर चढने और उतर जाते—

काश कभी इन्सान को आशा का कसर न होता

तमगे

बहादुर लोग मेरे देस दे, बहादुर लोग तेरे देस दे
इह सारे मरन मारन जाणदे, सिरा नू वारन जाणदे
सिर्फ इक गल्ल वखरी है कि सिर कदे आपणा नही हुदा।

इनसान दी इक लाश हुदी है पर खुदा दी लाश नही हुदी
ते जदो वी इन्सान विचले रब्ब दा टुकडा मरे
उस दी कदे बदबू नही अउदी

महबूब किसे दा कोई नही बिल्कुल रकीब दा खतरा नही
ते ना ही खतरा किसे दद दा

सिफ जिहडी लीक वड्डी है उह इहना दा अपमान करदी है
इह लीक मेट दे, कि लीक जो सरबत्त दे मेपे नही अउदी
सो सारी जित्त वी निर्विघ्न है ते सारा जशन वी निर्विघ्न है

वक्त मुसकरा रिहा है
ते इन्हा दी छाती ते ला रिहा है निपुसक बहादुरी दे कई तमगे

तमगे

बहादुर लोग मेरे देश के, बहादुर लोग तेरे देश के
यह सभी मरना-मारना जानते हैं, सिरो को वारना जानते हैं
सिर्फ यह बात और है कि सिर कभी अपना नही होता

इन्सान की एक लाश होती है पर खुदा की लाश नही होती
और जब भी इन्सान के भीतरी खुदा का टुक्डा मरे
उसकी कभी बदबू नही आती ।

महबूब किसी का कोई नही बिल्कुल रकीब का खतरा नही
और न ही खतरा किसी दर्द का

सिफ जो लकीर बडी है वह इन का अपमान करती है
ये लकीर को मिटाते, कि लकीर सब के नाप की नही होती
सो पूरी विजय निर्विघ्न है और पूरा जश्न भी निर्विघ्न है

वक्त मुस्करा रहा है—
और इनकी छाती पर लगा रहा है नपुसक बहादुरी के कई तमगे

इक खत

मैं—इक परवत्ती 'ते पई पुस्तक।
शाइद साध-बचन हां, जा भजन माला हां,
जा कामसूत्र दा इक काड,
जो कुझ आसण 'ते गुप्त रोगा दे टोटके,
पर जापदा—मैं इन्हा विचो कुझ वी नही।
(कुझ हुदी ता जरूर कोई पढदा)

ते जापदा इक क्रातिकारीआ दी सभा होई सी
ते सभा विच जो मता पास होईआ सी
मैं उसे दी इक हथ लिखत कापी हां।
ते फेर उत्तो पुलिस दा छापा
ते कुझ पास होईआ सी, कदे लागू न होईआ
सिफ 'कारवाई' खातर साभ के रखिआ गिआ।

ते हुण सिर्फ कुझ चिडीआ अउदीआ
चुझ विच तीले लिअउदीआ
ते मेरे बदन उत्ते बैठ के
उह दूसरी पीढी दा फिकर करदीआ।
(दूसरी पीढी दा फिकर किन्ना हसीन फिकर है!)
पर किसे उपराले लई चिडिआ दे खम्ब हुदे हन
ते किसे मते दा कोई खम्ब नही हुदा।
(जा किसे मत दी कोई दूसरी पीढी नही हुदी?)

एक ख़त

मैं—एक आले मे पडी पुस्तक ।
शायद सन्त-वचन हूँ, या भजन-माला हूँ,
या काम-सूत्र का एक काण्ड,
या कुछ आसन, और गुप्त रोगो के टोटके
पर लगता है मैं इन मे से कुछ भी नही ।
(कुछ होती तो ज़रूर कोई पढता)

और लगता—कि क्रान्तिकारियो की सभा हुई थी
और सभा मे जो प्रस्ताव रखा गया
मैं उसी की एक प्रतिलिपि हूँ
और फिर पुलिस का छापा
और जो पास हुआ कभी लागू न हुआ
सिर्फ़ कार्रवाई की खातिर सँभाल कर रखा गया ।

और अब सिर्फ़ कुछ चिडियाँ आती हैं
चोच में कुछ तिनके लाती हैं
और मेरे वदन पर बैठ कर
वे दूसरी पीढी की फ़िक्र करती है
(दूसरी पीढी की फिक्र कितनी हसीन फिक्र है !)
पर किसी भी यत्न के लिए चिडियो के पख होते हैं,
पर किसी प्रस्ताव का कोई पख नही होता ।
(या किसी प्रस्ताव की कोई दूसरी पीढी नही होती ?)

सिर्फ वदे सोचदी हा सुप के वेखा
कि मेरा भविख त्त्थे है ?
ते एस फिकर विच मेरी कुझ जिल्द लहिंदी है,
पर जदो वी कुझ सुघणा चाहवा
सिफ विठा दी हवाड अउदी है
ओ मेरी धरती दे भविख
मैं—तेरी वर्तमान दशा !

सिर्फ कभी सोचती हूँ कि सूंघ कर देखूं
कि मेरा भविष्य कहां है।
ओ फिर फिक्र मे मेरी कुछ जिल्द उतरती है
पर जब कुछ सूंघना चाहूं
सिर्फ बीटो की गन्ध आती है
ओ मेरी धरती के भविष्य !
मैं—तेरी वतमान दशा !

इक दृष्टिकोण

सूरज नू सारे खून माफ हन।
दुनीआ दे हर इन्सान दा उह रोज 'इक दिन' कतल करदा है
ते हर इक उम्र दा इक टुकडा रोज जिबाह हुदा है
इन्सान दे अखतिआर सिर्फ एना है—
कि जिबाह होय टुकडे नू उह घवरा के सुट देवे, ते डरे,
जा निडर उस नू कबाब वाग भुन्ने, खावे,
ते साहवा दी शराव पीदा उह अगले टुकडे दी उडीक करे

एक दृष्टिकोण

सूरज को सारे खून माफ है।
दुनिया के हर इन्सान का वह रोज़ 'एक दिन' कत्ल करता है
और हर एक उम्र का एक टुकड़ा रोज़ जिवह होता है
इन्सान के इख्तियार में सिर्फ इतना है—
कि ज़िवह हुए टुकड़े को वह घबरा के फेंक दे, और डरे,
या निडर उसे कबाब की तरह भूने, खाये
और सांसों की शराब पीता वह अगले टुकड़े का इन्तज़ार करे



इक सोच

भारत दीआ गलीआ विच भटक्दी हवा
चुल्हे दी बुझदी अग्ग फोलदी
हुदारे अन्न दी इक बुरकी तोड़दी
ते गोडीआ 'ते हत्थ रख के फेर उठदी है

चीन दे पीले ते जद होठा दे फलहे
अज विलक के इक वाज देंदे हन
उह जादी ते हर इक सध विच सुकदी
ते फेर चीक मारके उह वीअतनाम विच डिगदी है

मसाण घरा 'चो बडीआ हवाडा औदीआ
ते समुन्दरो पार बैठे—मसाण घरा दे वारिस
बारूद दी हवाड नू शराब दी हवाड विच भिउदे हन

बिलकुल उस तरहा, जिस तरहा—
    कि मसाण घरा दे दूसरे वारिस
मुख दी हवाड नू तकदीर दी हवाड विच भिउदे हन
ते लोका दे दुख दी हवाड नू
    तकरीर दी हवाड विच भिउदे हन।

ते इज़राइल दी सजरी मिट्टी
जा पुराणी रेत अख दी जो लहू विच भिजदी है
ते जिस दी हवाड—खामखाह शहादत दे जाम विच डुबदा ह

एक सोच

भारत की गलियो मे भटकती हवा
चूल्हे की बुझती आग को कुरेदती
उधार लिये अन्न का एक ग्रास तोडती
और घुटनो पै हाथ रख के फिर उठती है

चीन के पीले और ज़र्द होठो के छाले
आज बिलख कर एक आवाज़ देते हैं
वह जाती और हर एक गले मे सूखती
और चीख मारकर वह वीयतनाम मे गिरती है

श्मशान-घरो मे से एक गन्ध-सी आती
और सागर पार बैठे—श्मशान-घरो के वारिस
बारूद की इस गन्ध को शराब की गन्ध मे भिगोते हैं।

बिलकुल उस तरह, जिस तरह—
    कि श्मशाम-घरो के दूसरे वारिस
भूख की एक गन्ध को तक़दीर की गन्ध मे भिगोते हैं
और लोगो के दु खो की गन्ध को—
    तकरीर की गन्ध मे भिगोते हैं।

और इज़राइल की नयी-सी माटी
या पुरानी रेत अरब की जो खून मे है नोंगनी
और जिस की गन्ध— खामखाह शहादत के जाम मे है डूबती—

छाती दीआ गलीआ विच भटकदी हवा
इह सभे हवाडा सुघदी ते सोचदी
कि धरती दे घरो सूतक दी महक कदो आवेगी ?
कोई इडा—किसे मत्थे दी नाड
—कदो गर्भवती होवेगी
गुलाबी मास दा सुपना—
अज सदीआ दे ज्ञान तो वीर्य दी बूद मगदा

छातो की गलियो मे भटकती हवा
यह सभी गन्धें सूँघती और सोचती—
कि धरती के आँगन से सूतक की महक कब आयेगी ?
कोई इडा—किसी माथे की नाडी
—कब गभवती होगी ?
गुलाबी मास का सपना—
आज सदियो के ज्ञान से वीर्य की बूद माँगता

ऐश ट्रे

इलहाम दे धुए तों लैके सिगरट दी राख तक
उमर दा सूरज ढले
मत्थे दी सोच वले
इक फेफडा गले
इक वीअतनाम जले

ते रोशनी—हनेरे दा पिंडा जिउ ताप विच शूके
ते ताप दी घूकी दे विच—
हर मजहब वरडावे
हर फलसफा लगावे
हर नजम थथलावे
आखणा चाहवे—
कि हर सलतनत सिक्के दी हुदी है, वारूद दी हुदी है,
ते हर जनमपत्री—
आदम दे जनम दी इक झूठी गवाही देदी है।

पैर विच लोहा वले
कन्न विच पत्थर ढले
सोचा दा हिसाव रुके
सिक्के दा हिसाव चले।
ते मैं आदम-अखीर विच वणदा मास दी इक ऐश ट्रे
इहलाम दे धुए तो लैके सिगरट दी राख तक
मैं वी जो सोचा पीतीआ

ऐश ट्रे

इलहाम के धुएँ से ले कर सिगरेट की राख तक
उम्र का सूरज ढले
माथे की सोच बले
एक फेफड़ा गले
एक वीयतनाम जले

और रोशनी-अँधेरे का बदन ज्यो ज्वर मे तपे
और ज्वर की अचेतना मे—
हर मज़हब बड़राए
हर फलसफा लँगड़ाये
हर नज़्म तुतलाये
और कहना-सा चाहे
कि हर सल्तनत सिक्के की होती है, बारूद की होती है
और हर जन्मपत्री—
आदम के जन्म की एक झूठी गवाही देती है।

पैर मे लोहा डले
कान मे पत्थर ढले
सोचो का हिसाब रुके
सिक्के का हिसाब चले
और मैं आदि-अन्त मे बनता मास की एक ऐश ट्रे
इलहाम के धुएँ से ले कर सिगरेट की राख तक
मैं ने जो फिक्र पिये

उहना दी राख झाडी सी,
तुसी वी झाड सक्दे हो।

ते चाहवो ता मास दी इह ऐश ट्रे मेज ते सजावो,
जा गाधी, लूथर ते कैनेडी कहि के
चाहवो ता तोड सकदे हो—

उन की राख झाडी थी
तुम भी झाड सकते हो

और चाहो तो मास की यह ऐश ट्रे मेज पर सजाओ
या गाधी, लूथर और कैनेडी कह कर
चाहो तो तोड सकते हो—

जरावकतर

मैं दोस्ती दा जरावकतर पहन लीता है
ते नगे बदन नू हुण कुझ नही छोहदा
ना दुश्मन दा हत्थ छोहदा है।
ना मेरे दोस्त दीआ वाहवा छोह दीया।

मैं दोस्ती दा जरावकतर पहन लीता है।
मैं खुश हा सिर्फ इह क्यो पुछदे हो मैनू
कि कुझ खुशीया एनीया उदास क्यो हुदीया ?
हुणे कुझ उडदीआ चिडीआ
मेरे मत्थे ते बैठ गईआ सन
शायद जरावकतर नू—
इके रुक्ख दी हरिआवल समझ के
पर लोहे दे पत्तीआ नू चुझ मार के—
उह हुणे चिचलाईआ सन,
ते मेरे मत्थे तो उड गईआ हन।
झल्लीया चिडीया—
जरावक्तर वी भला कदे चिडीआ तो डरदा है ?
पर शायद कोई चुझ उहा मास ते वी मारी सी
मेरे मत्थे दा मास कुझ पीड जिहा करदा है
वक्त ने अज गले विचो—हर कपडा उतार दित्ता है
कुल तिन जोडे ही सन—
इक भूत दा, इक वतमान दा, ते इक भविख दा
ते शायद तिने ही जोडे वहुत मैले सन

जरावख्तर

मैं ने दोस्ती का जरावख्तर पहन लिया है
और नगे वदन को अब कुछ नही छूना
न दुश्मन का हाथ छूता है
न मेरे दोस्त की बाँहे

मैंने दोस्ती का जरावख्तर पहन लिया है
मैं खुश हूँ, पर आप यह क्यो पूछते हैं
कि कुछ खुशियाँ इतनी उदास क्यो होती हैं ?
अभी कुछ उडती चिडियाँ
मेरे माथे पर बैठ गई थी
शायद जरावख्तर को—
एक पेड की हरियाली समझ कर
पर लोहे के पत्तो को चोच मार कर
वे अभी चिचियाई थी,
और मेरे माथे से उड गई हैं।
बावरी चिडियाँ—
जरावख्तर भी कभी चिडियो से डरा है ?
पर शायद कोई चोच मास पर भी लगी थी
मेरे माथे का मास कुछ दुखता-सा लगता है
वक्त ने अब गले से हर वस्त्र उतार दिया है
सिफ तीन जोडे ही थे—
एक भूत का, एक वतमान का और एक भविष्य का

और शायद तीनो ही जोडे वहुत मैले थे
ते नगा वक्त हुण कध कोल खडा
कुझ शर्मिन्दा जिहा लगदा है
जा उस दी नगी पिठ 'ते इह जो कुझ सिसकदा
इह मेरीआ अक्खा दा अक्स है ?
ते उसने आपणा नहीं, मेरा नगेज पीता है ?
पर मैं—मैं ता इस समे नगा नही
मैं दोस्ती दा जरावकतर पहन लीता है—

इमरोज चित्रकार

मेरे साहमणे—ईज़ल दे उत्ते, इक कैनवस पई है
कुझ इज जापदा—
कि कैनवस ते लग्गा रग दा टोटा
        इक लाल टाकी वण के हिलदा है
ते हर इन्सान दे अन्दर दा पशू
इक सिंग चुकदा है।
सिंग तणदा है—
ते हर कूचा गली वाज़ार इक 'रिंग' वणदा है
ते मेरीआ पजावी रगा विच इक स्पेनी ग्वायत खौलदी
गोया दी मिथ—वुल फाइटिंग—टिल डैथ—

इमरोज चित्रकार

मेरे सामने—ईजल पर एक कैनवस पडा है
कुछ इस तरह लगता है—
कि कैनवस पर लगा रग का टुकडा
एक लाल कपडा बन कर हिलता है
और हर इन्सान के अन्दर का पशु
एक सींग उठाता है।
सींग तनता है—
और हर कूचा-गली-बाजार एक 'रिंग' बनता है
मेरी पजाबी रगो मे एक स्पेनी परम्परा खौलती
गोया कि मिथ—बुल फाइटिंग—टिल डेथ—

ते उत्ते देशकाल दी इक मोहर लाई है
ते उत्ते कई इजमा दे किल ठोके हन ।

पर तू—
मेरी कध दे कैलंडर 'चो निकल के
फिर उस दी तारीख बदलदा
ते नवी चिंता, नवी मुकती, हत्थ विच लैके
तू मैंनू इक नवे दिहु वाग मिलदा ।

तेरी—इक नवे दिहु दी—अजमत
कि मेरी होंद दी इक छावीं गुठ ने
तिरी धुप दा इक बोल सुण लिआ,
ते जो इतिहास दा असुभावक करम है
पर सुभावक है—
उह मेरा सुभावक बण गया—

और ऊपर देशकाल की मोहरें लगाई है
और ऊपर कई इज्मो की कीलें गाडी हैं

पर तू—
मेरी दीवार के कैलेण्डर से निकल कर
फिर उस की तारीख बदलता
और नई चिन्ता, नई मुक्ति, हाथ मे ले कर
तू मुझे एक नये दिन की तरह मिलता

तेरी—एक नए दिन की—अज़मत
कि मेरे अस्तित्व के एक सघन कोने ने
तेरी इस धूप का एक बोल सुन लिया
और जो इतिहास का अस्वाभाविक कर्म है
पर तेरा स्वाभाविक—
वह मेरा स्वाभाविक बन गया

नौ सुपने

तृप्ता अभक के जागी, लेफ नू सवाहरिया कीता,
सूही सग जिहा पल्ला—मोडिया ते लीता,

अपने मद वल तक्की,
फिर चिट्टे विछोणे दे—वट वाग झक्की,

ते कहिण लग्गी
अज माघ दी राते मैं नदिए पैर पाया

बडी ककरी राते इक नदी कोसी सी

गल अणहोई
पाणी नू अग लाया ता नदी दुध दी होई

कोई नदी करामाती मैं दुध विच न्हाती

इस तलवडी इह कही नदी ? किहा सुपना ?

ते नदी विच च न तरदा सी
मैं तली उत्ते च न धरिआ घुट भरिआ

ते नदी दा पाणी— मेरी रत विच घुलदा पिआ
ते उही चानण—मेरी कुख विच हिलदा पिआ।

नौ सपने

तृप्ता चौंक के जागी, लिहाफ को सँवारा,
लाल लज्जा-सा आँचल कन्धो पर ओढा

अपने मर्द की तरफ देखा
फिर सफेद बिछौने की सलवट की तरह झिझकी

और कहने लगी
आज माघ की रात मैं ने नदी मे पैर डाला

बडी ठण्डी रात मे—एक नदी गुनगुनी थी

बात अनहोनी,
पानी को अग लगाया नदी दूध की हो गई

कोई नदी करामाती, मैं दूध मे नहाई

इस तलवडी मे यह कैसी नदी ? कैसा सपना ?

और नदी मे चाँद तिरता था
मैं ने हथेली पर चाँद रखा, घूँट भरी

और नदी का पानी—मेरे खून मे घुलता रहा
और वह प्रकाश मेरी कोख मे हिलता रहा ।

फग्गण दी कटोरी विच सत रग घोला मुखो न वोला

इह मिट्टी दी देह सकारथी हुदी
जव वक्खी दे विच कोई आह्लणा पादा,

इह किहा जप ? किहा तप ?

कि मावा नू रव दा दीदार कुख विचो हुदा

कच्चे गर्भ दे अरोए मेरा जी न खलोए

बैठी रिडकिणा पाइआ ते जापे मक्खण हिल्लिआ
मैंचाटी हत्थ पाइआ ता सूरज दा पेडा निकलिआ

इह किहा भोग सी ? किहा सजाग सी ?

ते चढे चेतर इह किहा सुपना ?

मेरे तो मेरी कुख तक इह सुपनिआ दा फासला

मेरी जिआ हुलसिआ ते हिआ डरिआ,

वैसाख दी वाडी, इह कणक सी
छज विच छटण नू पाई ता छज तारिआ दा भरिआ

अज भिन्नी रात दा वेला
ते जेठ दे महीने इह कही वाज सी ?

ज्यो जला विचो थला विचो इक नाद जिहा उठे
इह मोह दा ते माया दा गीत सी ?
जा रव दी काइआ दा गीत सी ?

कोई देवी सुगन्ध सी ? जा मेरी नाभि दी गन्ध सी ?

फागुन की कटोरी मे सात रग घोलूँ, मुख से ना बोलू

यह मिट्टी की देह सार्थक होती
जब कोख मे कोई नीड बनाता है

यह कैसा जप ? कैसा तप ?

कि माँ को ईश्वर का दीदार कोख मे होता है

कच्चे गर्भ की उबकाई एव उकताहट-सी आई

मथने के लिए बैठी तो लगा मक्खन हिला,
मैं ने मटकी मे हाथ डाला तो सूरज का पेडा निकला ।

यह कैसा भोग था ? कैसा सयोग था ?

और चढते चैत—यह कैसा सपना ?

मेरे और मेरी कोख तक—यह सपनो का फासला ।

मेरा जिया हुलसा और हिया डरा,

वैसाख मे कटने वाला यह कैसा कनक था
छाज मे फटकने को डाला तो छाज तारो से भर गया

आज भीनी रात की बेला
और जेठ के महीने—यह कैसी आवाज थी ?

ज्यो जल मे से थल मे से एक नाद सा उठे
यह मोह और माया का गीत था
या ईश्वर की काया का गीत था ?

कोई दैवी सुगध थी ? या मेरी नाभि की महक थी ?

मैं ग्रहि ग्रहि जादी रही, डरदी रही,
ते एसे बाज दी सेधे मैं जना विच तुरदी रही

इह कही बाज ? विहा सुपना ?
किन्ना कु पराया ? किन्ना कु आपणा ?

मैं इक हरनी—वउरी जही हुदी रही,
ते आपणी कुख नाल आपणे कन लादी रही

हाड दा महीना—तृप्ता दी अख खुली सुभाउके
ज्यो फुल खिडदा है, ज्यो दिहु चढदा है

"इह जिद मेरी— किहडिया सरा दा पाणी ?
मैं हुणे ऐथे इक हस वहिदा वेखिआ,

इह किहा सुपना ? कि जाग के वी जापे !
मेरी वखी दे विच—उहदा खब हिलदा पिआ"

कोई रख ना मनुख ना नेडे
फेर किहने मेरी झोली नरेल पाइआ ?

मैं खोपा तोडिआ ता लोक गरी लैण आया
कच्ची गरी दा पाणी मैं छनिआ 'च पाया

कोई रख ना रवायत ना, दुई ना द्वैत ना
व्हे ते लुकाई ढुकी
ते खोपे दी गरी—फेर वी ना मुकी।

इह किहा खोपा ? इह किहा सुपना ?
ते सुपनिआ दे धागे कि ने कु लम्बे ?

इह छाती दा सावण, मैं छाती नू हत्थ लाइआ
ता उही गरी दा पाणी—दुध वाग सिम्मे।

मैं सहम-सहम जाती रही, डरती रही
और इसी आवाज की सीध मे वनो मे चलती रही

यह कैसी आवाज, कैसा सपना ?
कितना-सा पराया ? कितना सा अपना ?

मैं एक हिरनी—बावरी-सी होती रही,
और अपनी कोख से अपने कान लगाती रही।

आषाढ का महीना—स्वाभाविक तृप्ता की आँख खुली
ज्यो फूल खिलता है, ज्यो दिन चढता है

"यह मेरी, जि़दगी किन सरोवरो का पानी
मैं ने अभी यहाँ एक हंस बैठता हुआ देखा

यह कैसा सपना ? कि जाग कर भी लगता है
मेरी कोख मे उस का पंख हिल रहा है "

कोई पेड और मनुष्य मेरे पास नही
फिर किस ने मेरी झोली मे नारियल डाला ?

मैं ने खोपा तोडा तो लोग गरी लेने आये
कच्ची गरी का पानी मैं ने कटोरो मे डाला

कोई रख ना रवायत ना, दुई ना द्वैत ना
द्वार पर असख्य लोग आये
पर खोपे की गरी—फिर भी न खत्म हुई।

यह कैसा खोपा ! यह कैसा सपना ?
और सपनो के धागे कितने लम्बे !

यह छाती का सावन, मैं ने छाती को हाथ लगाया
तो वह गरी का पानी— दूध की तरह टपका।

इह किहा भादो इह किहा जादू

सब गल्ला निआरिआ
इस गभ दे बालक दा चोला कोण सीवेगा

इह कही पच्छी, इह कहे मुड्ढे
मैं कल जिवें सारी रात किरना अटेरिआ

असु दे महीने—तृप्ता जागी ते विरागी

"नी जिन्दे मेरिए !
तू किहदे लई कतनी ए मोह दी पूणी ?

मोह दिआ तदा विच अम्बर ना वलीदा, सूरज ना वझीदा
इक सच जिही वस्तु इहदा चोला ना क़तीदा"

ते तृप्ता ने कुख अग्गे मत्था निवाइआ—
मैं सुपनिआ दा भेत पाइआ, इह ना अपणा ना पराइया

कोई अजल दा जोगी—जिवें मौज विच आइआ
ऐंवे घडी पल बैठा सेके कुख दी धूणी

नी ज़िन्दे मेरिए !
तू किहदे लई कतनी ए—मोह दी पूणी

मेरा कनक धर्मी, मेरी जिन्द सुकर्मी
मेरी कुख दी धूणी, कत्ते अग्ग दी पूणी

वलिआ देह दा दीवा छोहिआ चानण दा तोला
सद्दो धरती दी दाई, मेरा पहिलडा वीला

यह् कैसा भादो ? यह् कैसा जादू ?

सब बाते न्यारी हैं
इस गर्भ के बालक का चोला कौन सीयेगा ?

यह् कैसा अटेरन ? ये कैसे मुड्ढे !
मैं ने कल जैसे सारी रात किरणें अटेरी

अस ज के महीने—तृप्ता जागी और वैरागी

"अरी मेरी ज़िन्दगी !
तू किस के लिए कातती है मोह् की पूनी !

मोह् के तार मे अम्बर न लपेटा जाता, सूरज न बाँधा जाता
एक सच-सी वस्तु इसका चोला न काता जाना "

और तृप्ता ने कोख के आगे माथा नवाया
मैं ने सपनो का मर्म पाया, यह् ना अपना ना पराया

कोई अज़ल का जोगी—जैसे मौज मे आया
यू ही पल भर बैठा—सेंके कोख की धूनो

अरी मेरी ज़िन्दगी !
तू किस के लिए कातती है—मोह् की पूनी

मेरा कार्तिक धर्मी, मेरी ज़िन्दगी सुकर्मी
मेरी कोख की धूनी, काते आग की पूनी

दीप देह् का जला, तिनका प्रकाश का छुआ
बुलाओ धरती की दाई, मेरा पहला जापा

आदि पुस्तक

मैं सा—ते शायद तू वी

शायद इक साह् दी विथ ते पलोता
शायद इक नजर दे हनेरे ते बैठा
शायद अहसास दे इक मोड ते तुरदा।
पर ओह परा-इतिहासक समिआ दी गल्ल है .

एह मेरी ते तेरी होद सी
जो दुनिया दी आदि भापा वणी
मैं दी पहचाण दे अक्खर वणे
तू दी पहचाण दे अक्खर वणे
ते ओहना आदि भापा दी आदि पुस्तक लिखी।

ऐह मेरा ते तेरा मेल सो
असी पत्थरा दी सेज ते सुत्ते,
ते अक्खा होंठ उगला पोटे
मेरे ते तेरे वदन दे अक्खर वणे
ते ओहना ओह आदि पुस्तक अनुवाद कीती।

ऋगवेद दी रचना ता वहुत पिच्छो दी गल्ल है .

आदि पुस्तक

मैं थी—और शायद तू भी

शायद एक सास के फासले पर खड़ा
शायद एक नजर के अंधेरे पर बैठा
शायद एहसास के एक मोड़ पर चल रहा।
पर वह पुरा-ऐतिहासिक समय की बात है

यह मेरा और तेरा अस्तित्व था
जो दुनिया की आदि भाषा बना
मैं की पहचान के अक्षर बने
तू की पहचान के अक्षर बने
और उन्होंने आदि भाषा को आदि पुस्तक लिखी।

यह मेरा और तेरा मिलन था
हम पत्थरो की सेज पर सोये
और आखें, होठ, उँगलियाँ, पोर
मेरे और तेरे बदन के अक्षर बने
और उन्होंने उस आदि पुस्तक का अनुवाद किया।

ऋग्वेद की रचना तो बहुत बाद की बात है

आदि रचना

मैं—इक निराकार मैं सा

एह मैं दा संकल्प सी, जो पाणी दा रूप बणिआ
ते तू दा संकल्प सी, जो अग्ग वाग फुरिआ
ते अग्ग दा जलवा पाणिया ते तुरिआ।
पर ओह परा-इतिहासक समिआ दी गल्ल है

एह मैं दी मिट्टी दी त्रेह सी
कि उस ने तू दा दरिआ पीता,
एह मैं दी मिट्टी दा हरा सुपना
कि तू दा जगल उस लब्भ लीता,
एह मैं दी मिट्टी दी वाशना
ते तू दे अबर दा इश्क सी
कि तूं दा नीला जिहा सुपना
मिट्टी दी सेज ते सुत्ता।
एह तेरे ते मेरे मास दी सुगन्ध सी—
ते एहो हकीकत दी आदि रचना सी।

ससार दी रचना ता बहुत पिच्छो दी गल्ल है

आदि रचना

मैं—एक निराकार मैं थी

यह मैं का सकल्प था, जो पानी का रूप बना
और तू का सकल्प था, जो आग की तरह नुमाया हुआ
और आग का जलवा पानी पर चलने लगा
पर वह पुरा-ऐतिहासिक समय की बात है

यह मैं की मिट्टी की प्यास थी
कि उस ने तू का दरिया पी लिया
यह मैं की मिट्टी का हरा सपना
कि तू का जगल उसने खोज लिया
यह मैं की माटी की गन्ध थी
और तू के अम्बर का इश्क था
कि तू का नीला-सा सपना
मिट्टी की सेज पर सोया।
यह तेरे और मेरे मास की सुगन्ध थी—
और यही हकीकत की आदि रचना थी।

ससार की रचना तो बहुत बाद की बात है

आदि चित्र

मैं सा—ते शायद तू वी

मैं छावा दे अदर डोलदी इक छा सा
ते शायद तू वी इक खाकी जिहा साया
हनेरिआ दे अदर हनेरिआ दे टुकडे
पर ओह परा-इतिहासक समिआ दी गल्ल है

राता ते रुखा दा हनेरा सी
जो तेरी ते मेरी पुशाक सी,
इक सूरज दी किरन आयी सी
ओह दोहा दे बदन 'चो लग्घी
ते परा पत्थर दे उत्ते उक्करी गयी।
सिर्फ अगा दी गुलायी सी, चानण दीया नोका
एह दुनिया दा आदि चित्र सी,
पत्तिआ ने हरा रग भरिआ
बद्दला ने दूधिया, जवर ने सलेटी
ते फुल्ला ने लाल, पीला, काशनी।

चित्रा दी कला ता बहुत पिच्छो दी गल्ल है .

आदि चित्र

मैं थी—और शायद तू भी

मैं छांव के भीतर थिरकती-सी छाया
और तू भी शायद एक खाकी-सा साया
अँधेरो के भीतर अँधेरो के टुकडे
पर वह पुरा-ऐतिहासिक समय की बात है

रातो और पेडो का अँधेरा था
जो तेरी और मेरी पोशाक थी,
एक सूरज की किरण आई
वह दोनो के वदन मे से गुजरी
और परे पत्थर पर अकित हो गयी।
सिर्फ अगो की गोलायी थी, चादनी की नोके
यह दुनिया का आदि चित्र था,
पत्तो ने हरा रग भरा
बादलो ने दूधिया, अबर ने सलेटी
और फूलो ने लाल, पीला, काशनी।

चित्रो की कला तो बहुत बाद की बात है

आदि सगीत

मैं सा—ते शायद तू वी

इक अतहीन चुप्प हुदी सी
जो सुक्के हाये पत्ते दी तरा भुरदी
जा अजाई कड्ढे दी रेत वाग खुरदी
पर ओह् परा-इतिहासक समिआ दी गल्ल है

मैं तैनू इक मोड ते आवाज दित्ती
ते अग्गो तू मोडवी आवाज दित्ती
ता पौणा दे सघ विच्च कुझ थरथराया,
मिट्टी दे किणके कुझ सरसराये
ते नदी दा पाणी कुझ गुणगुणाया
रुक्ख दीया टाहणा कुन्न क्स्सिया गइया
पत्तिआ दे विच्चो इक छणक आयी
फुल्ल दी डोडी ने अक्ख झमकी
ते इक चिडी दे कुझ खभ हिल्ले,
एह पहला नाद सी जो कन्ना ने सुणिआ सी ।

सप्तसुरा दी सज्ञा ता वहुत पिच्छो दी है

आदि सगीत

मैं थी—और शायद तू भी

एक असीम खामोशी थी
जो सूखे पत्तो की तरह झरती
या यूं ही किनारे की रेत की तरह घुलती
पर वह पुरा-ऐतिहासिक समय की बात है ।

मैं ने तुझे एक मोड पर आवाज दी
और जब तू ने पलट कर आवाज़ दी
तो हवाओ के गले मे कुछ थरथराया
मिट्टी के कण कुछ सरसराये
और नदी का पानी कुछ गुनगुनाया,
पेड की टहनिया कुछ कस-सी गयी
पत्तो मे से एक झकार उठी
फूलो की कोपल ने आंख झपकाई
और एक चिडिया के पख हिले
यह पहला नाद था जो कानो ने सुना था।

सप्त सुरो की सज्ञा तो बहुत बाद की बात है

आदि धर्म

मैं ने जद तू नू पहनिआ
ता दोवें ही पिंडे अन्तर्ध्यान सन,
अग फुल्ला दी तरा गुदे गये
ते रूह दी दरगाह ते अरपे गये

तू ते मैं हवन दी अग्नि
तू ते मैं सुगन्धित सामग्गिरी,
इक दूजे दा ना होठा तो निकलेया
ता ओही ना पूजा दे मतर सन,
एह तेरी ते मेरी होद दा इक यज्ञ सी
धम कम दी साखी ता बहुत पिच्छों दी गल्ल है

आदि धर्म

मैं ने जब तू को पहना
तो दोनो के बदन अन्तर्ध्यान थे,
अंग फूलो की तरह गूथे गये
और रूह की दरगाह पर अर्पित हो गये

तू और मैं हवन की अग्नि
तू और मैं सुगंधित सामग्री
एक-दूसरे का नाम होठो से निकला
तो वही नाम पूजा के मन्त्र थे,
यह तेरे और मेरे अस्तित्व का एक यज्ञ था
धर्म कर्म की कथा तो बहुत बाद की बात है

आदि कबीला

मैं दी जद रुत मौली सी
मास दे बूटे नू बूर आया सी
पौण कन्नी महक बज्झी सी
त दा अक्खर लहलहाया सी

मैं दी ते तू दी छावें
जद 'ओह' आके नचित सुत्ता सी,
एह 'ओह' दा इक मोह सी
कणक दा दाणा असा वड लीता सी,
'ओह' सहज सी, सुभावक सी, मैं दी ते तू दी तृप्ति

कबीलिआ दी कथा ता बहुत पिच्छो दी गल्ल है

आदि कबीला

मैं की जब रुत गदराई थी
मास के पौधे पर बौर आया था
पवन के आँचल में महक बँध गयी
तू का अक्षर लहलहाया था

मैं की और तू की छाँव में
जब 'वह' आ कर निश्चिन्त सो गया
यह 'वह' का एक मोह था
गेहूँ का दाना हम ने बाँट लिया
'वह' सहज था, स्वाभाविक था, मैं की और तू की तृप्ति

क़बीलों की कथा तो बहुत बाद की बात है

आदि स्मृति

काया दी हकीकत तो लके—
काया दी आवरू तीकण मैं सा,
काया दे हुस्न तो लैके—
काया दे इश्क तीकण तू सी।

एह मैं अक्खर दा इल्म सी
जिस मैं नू इखलाक दित्ता सी।
एह तू अक्खर दा जश्न सी
जिस 'ओह' नू पहचाण लीता सी,
भय मुक्त मैं दी हस्ती, ते भय मुक्त तू दी, 'ओह' दी,

मनु दी स्मृति ता बहुत पिच्छो दी गल्ल है

आदि स्मृति

काया की हकीकत से ले कर—
काया की आबरू तक मैं थी,
काया के हुस्न से ले कर—
काया के इश्क तक तू था।

यह मैं अक्षर का इल्म था
जिस ने मैं को इखलाक दिया।
यह तू अक्षर का जश्न था
जिस ने 'वह' को पहचान लिया,
भय-मुक्त मैं की हस्ती और भय-मुक्त तू की, 'वह' की

मनु की स्मृति तो बहुत बाद की बात है

चुप दी साज़िश

रात उघलादी पई
किसे ने इन्सान दी छाती नू सन्न लाई है
हर चोरी तो भिआनक इह सुपनिआ दी चोरी है।

चोरा दे खुरे—
हर देस दे हर शहर दी हर सडक 'ते बैठे
पर कोई अख तकदी नही, ना चौकदी।
सिर्फ इक कुत्ते दी तरा इक सगली दे नाल बज्झी
किसे वेले किसे दी कोई नज़म भौंकदी।

चुप की साजिश

रात ऊँघ रही है
किसी ने इनसान की छाती मे सेंध लगाई है
हर चोरी से भयानक यह सपनो की चोरी है।

चोरी के निशान—
हर देश के हर शहर की हर सकड पर बैठे हैं
पर कोई आँख देखती नही, न चौंकती है।
सिर्फ एक कुत्ते की तरह एक जजीर से बँधी
किमी वक्त किसी की कोई नज्म भौंकती है।

अमृता प्रीतम

इक दर्द सी—
जो सिगरट दी तरहा मैं चुपचाप पीता है
सिर्फ कुझ नजमा हन—
जो सिगरट दे नाला मैं राख वागण झाडीआ

अमृता प्रीतम

एक दर्द था—
जो सिगरेट की तरह मैंने चुपचाप पिया है
सिर्फ कुछ नज़्मे है—
जो सिगरेट से मैं ने राख की तरह झाडी हैं।

मेरा पता

अज मैं आपणे घर दा नवर मिटाइआ है
ते गली दे मत्थे ते लग्गा गली दा नाउ हटाइया है
ते हर सडक दी दिशा दा नाउ पूझ दित्ता है
पर जे तुसा मैंनू ज़रूर लभणा है
ता हर देस दे, हर शहर दी, हर गली दा बूहा ठकोरो
इह इक सराप है, इक वर है
ते जित्थे वी सुततर रूह दी झलक पवे
—समझणा उह मेरा घर है ।

मेरा पता

आज मैंने अपने घर का नम्बर मिटाया है
और गली के माथे पर लगा गली का नाम हटाया है
और हर सडक की दिशा का नाम पोछ दिया है
पर अगर आपको मुझे ज़रूर पाना है
तो हर देश के, हर शहर की, हर गली का द्वार खटखटाओ
यह एक शाप है, एक वर है
और जहाँ भी आज़ाद रूह की झलक पडे
—समझना वह मेरा घर है।

ज्ञानपीठ से प्रकाशित अन्य महत्त्वपूर्ण कविता-संग्रह

तार सप्तक (प स)	स अज्ञेय	32 00
दूसरा सप्तक (त स)	"	24 00
तीसरा सप्तक (च स)	"	21 00
रंगीन रुबाइयाँ	डॉ सदारगानी	3 00
एक और नचिकेता	जी शकर कुरुप	4 00
ओटक्कुपल (बासुरी) (पुर, द्वि स)	"	10 00
प्रतिनिधि सकलन (कविता, मराठी)	स दिनकर सोनवलकर	6 00
अतुका त	लक्ष्मीकान्त वर्मा	5 00
अभी और कुछ	शकु त माथुर	4 00
माया दपण	श्रीकान्त वर्मा	4 50
अग्निबीज	गोवि दच द्र पाडेय	4.50
शहर अब भी सम्भावना है	अशोक वाजपेयी	16 00
इतिहास पुरुष	देवराज	4 50
अ धा चाँद	मुनि रूपच द	3 50
आत्मजयी (प स)	कुवरनारायण लाइब्रेरी स	9 00
	पेपर बैक	6 00
चौसठ कविताएँ	इ दु जन	4 50
चाद का मुह टेढा है (स स)	ग मा मुक्तिबोध	28 00
हिम विद्ध	जगदीश गुप्ता	4 00
बीजुरी काजल आज रही (द्वि स)	माखनलाल चतुर्वेदी	4 50
अद्धशती	बालकृष्ण राव	4 00
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	3 00
वीणापाणि के कम्पाउण्ड मे	केशवच द्र वर्मा	4 50
देशा तर (द्वि स)	धमवीर भारती	
ठण्डा लोहा (तृ स)	"	7 00
सात गीत वप (त स)	"	6 00
कनुप्रिया (सातवा स)	" पेपर बैक	7 50
	लाइब्रे री	11 00
लेखनी-बेला (द्वि स)	वीरेन्द्र मिश्र	4 50
वद्धमान (महाकाव्य, पुरस्कृत)	अनूप शर्मा	12 00
पच प्रदीप	शा ति मेहरोत्रा	2 00
मेरे बापू	त मय बुखारिया	3 00

इक्कीस पत्तियों का गुलाब
औरत एक दृष्टिकोण
सफरनामा
जंग जारी है
कौन सी जिन्दगी ? कौन सा साहित्य ?
अपने अपने चार बरस
एक हाथ मेंहदी एक हाथ छाला
कच्चे अक्षर
शौक सुराही
मुहब्बतनामा
कड़ी धूप का सफर
अक्षर बोलते हैं
आज के काफिर
दग कबीरा

आत्म कथा

रसीदी टिकट
दस्तावेज

काव्य संग्रह

धूप का टुकड़ा
कागज और कनवस



भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध और अप्रकाशित सामग्री का अनुसंधान और प्रकाशन तथा लोक हितकारी मौलिक साहित्य का निर्माण

*